आज़ादी का अमृत महोत्सव

यूको अनुगूँज

यूको बैंक की हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष : 12 • अंक : 2 • अक्तूबर-मार्च-2023

यूको बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK
(A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust

जानकीवल्लभ शास्त्री

5 फरवरी 1916 में गया के मैगरा ग्राम में जन्मे छायावादोत्तर काल के सुविख्यात कवि आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री, जिन्हें उत्तर प्रदेश सरकार ने 'भारत भारती पुरस्कार' से सम्मानित भी किया, उन थोड़े-से कवियों में रहे हैं, जिन्हें हिंदी कविता के पाठकों से बहुत मान-सम्मान मिला है। आचार्य का काव्य संसार बहुत ही विविध और व्यापक है। प्रारंभ में उन्होंने संस्कृत में कविताएँ लिखीं। फिर महाकवि निराला की प्रेरणा से हिंदी में आए।

'रूप-अरूप, 'तीर तरंग, 'शिवा, 'मेघ-गीत, 'अवंतिका, 'कानन, 'अर्पण आदि इनके मुख्य काव्य संग्रह हैं। 'साहित्य वाचस्पति, 'विद्यासागर, 'काव्य-धुरीण तथा 'साहित्य मनीषी आदि अनेक उपाधियों से सम्मानित।
निधन 07 अप्रैल.

दुख को सुमुख बनाओ

दुख को सुमुख बनाओ, गाओ !
काली घटा छंटेगी कैसे ?
रिमझिम-रिमझिम स्वर बरसाओ !

कौन सुने करुणा की वाणी ?
दीन दृगों के आँसू पानी !
पर अगीत संगीत अभी भी, -
इसका लयमय भेद बताओ !

असह सहो दृढ़ प्राण बनाओ,
अश्रुकणों को गान बनाओ,
जब सुख छिटके चन्द्रकिरण बन
सजल नयन झुक, चुप हो जाओ !

यूको अनुगूँज

यूको बैंक की छमाही हिंदी गृह पत्रिका
वर्ष-12, अंक-2
अक्तूबर - मार्च 2023
एक टीम-एक स्वप्न-एक लक्ष्य

संरक्षक
सोमा शंकर प्रसाद
प्रबंध निदेशक एवं
मुख्य कार्यपालक अधिकारी

प्रेरणा
इशराक अली खान
कार्यपालक निदेशक-I
राजेन्द्र कुमार साबू
कार्यपालक निदेशक-II

दिग्दर्शन
मनीष कुमार
महाप्रबंधक
मानव संसाधन प्रबंधन एवं राजभाषा

संपादक
अजयेंद्रनाथ त्रिवेदी
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मंडल
सत्येन्द्र कुमार शर्मा
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
डॉ. सुनील कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
रोशनी सरकार साव
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
राम अभिषेक तिवारी
प्रबंधक (राजभाषा)

यूको बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय,
10 बी टी एम सरणी, कोलकाता - 700001
ई-मेल : horajbhasha.calcutta@ucobank.co.in
फोन : 033-4455 7384

इस अंक में दिए गए विचार लेखकों के हैं, संपादक मंडल तथा यूको बैंक के नहीं। इन विचारों से संपादक मंडल अथवा यूको बैंक की सहमति हो ही यह आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ का संदेश	2
कार्यपालक निदेशक-I का संदेश	3
कार्यपालक निदेशक-II का संदेश	4
महाप्रबंधक-राजभाषा का संदेश	5
संपादकीय	6
बैंकिंग लेख	
आवास ऋण और कारोबार के अवसर – मनीष त्रिपाठी	7
विशेष	
आज़ादी का अमृत महोत्सव – अभिजीत दास	9
आज़ादी का अमृत महोत्सव – अमित राज	12
आज़ादी का अमृत महोत्सव – डॉ. रजनी गुप्त	15
आज़ादी का अमृत महोत्सव – पूनम कुमारी प्रसाद	18
आज़ादी का अमृत महोत्सव – अमित कुमार सरवर	21
आज़ादी का अमृत महोत्सव – अंशुल त्रिपाठी	25
भाषा सौहार्द	
भाषा सौहार्द—बंगला - सृजीता भट्टाचार्जी	27
सुधीर सजल की गजलें	28
पुस्तक-चर्चा— डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह	29
विविध गतिविधियां	
हिन्दी प्रशिक्षण समन्वय समिति, के तत्वावधान में सदस्य बैंकों तथा वित्तीय संस्थानों के संकाय सदस्यों के लिए आयोजित हिन्दी माध्यम राष्ट्रीय सेमीनार	31
अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	33
हिन्दी दिवस - 2022	33
क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार	34
नराकास पुरस्कार	37
यूको जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला	38
यूको भाषा सेतु सम्मान	39
यूको राजभाषा सम्मान	40
विश्व हिन्दी दिवस	41
संसदीय राजभाषा समिति	42
यूको बैंक प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित हिन्दी कार्यशाला	43
अंचल कार्यालयों द्वारा आयोजित हिन्दी कार्यशाला	43
राजभाषा कीर्ति पुरस्कार 2021-22	44

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी की कलम से

प्रिय यूकोजन,

'अनुगूँज' हिंदी गृह पत्रिका के माध्यम से आप सभी के साथ संवाद करने में मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। गृह पत्रिकाएँ किसी भी संस्था में अभिव्यक्तियों को व्यक्त करने हेतु एक सर्वोत्कृष्ट मंच प्रदान करती हैं। भाषा के प्रचार-प्रसार में पत्र-पत्रिकाओं की अहम भूमिका होती है। पत्र-पत्रिकाएँ जहाँ विचारों को जन-मानस तक पहुंचाने का एक महत्वपूर्ण साधन रही है, वहीं दूसरी ओर यह लोगों को रचनात्मक लेखन के लिए भी प्रोत्साहित करती है।

आपको सूचित करते हुए हमें गर्व की अनुभूति हो रही है कि आप समस्त यूकोजन के अथक प्रयास, समग्र कर्तव्यनिष्ठा और पूर्ण उत्साह की बदौलत हमारे बैंक ने वित्तीय वर्ष 2022-23 के तहत बेहतर से बेहतरीन कार्य करते हुए बैंकिंग क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट कार्य किया है। इस हेतु आप सभी को बधाई!

सफलता की सीढ़ी को बरकरार रखने और उससे आगे जाने के लिए हमें नई योजना के साथ पूरे उत्साह, उमंग,जोश, ऊर्जा और ज़िंदादिली से अत्युत्तम कार्य करने होंगे। अपनी सफलता का उत्सव मनाने का बेहतर तरीका यह भी है कि हम ग्राहकों को उत्तम सेवा प्रदान करते रहें क्योंकि उनकी सेवा में ही हमारी सफलता निहित है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पूरा विश्व ग्राहक सेवा पर ही आधारित है। बैंकिंग क्षेत्र में हमें अपने ग्राहकों को त्वरित व सटीक सेवा देनी होगी ताकि वे हमसे सदैव जुड़े रहें। हमारी पूरी कोशिश हो कि हम ग्राहकों को बैंकिंग सेवा उनकी भाषा में दें। इससे ग्राहकों को हमारी संस्था के प्रति विशेष लगाव उत्पन्न होता है एवं हमारी सर्वोत्कृष्ट सेवा और तत्परता से ही ग्राहक भी हमारी मदद करने को तैयार रहते हैं।

हमें सफलता के लिए निरंतर लक्षित मार्ग पर चलना होता है। सफलता को कायम रखने के लिए हमें अपने कार्यों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना होगा ताकि लोग हमारा अनुसरण करें। जब हम मार्गदर्शक की भूमिका में होते हैं तो हमारी जिम्मेवारी और ज्यादा बढ़ जाती है। हमें ज्यादा से ज्यादा नमोन्मेषी कार्य करने होंगे ताकि हम दूसरों का नेतृत्व कर सकें। हमें प्रगाढ़ अनुभव के साथ बाजार में अपने अस्तित्व को बनाए रखना होगा।

कहा जाता है 'अनुभव की भट्टी में जो तपते हैं, दुनिया के बाजार में वही सिक्के चलते हैं।'

शुभकामनाओं सहित,

सोमा शंकर प्रसाद

कार्यपालक निदेशक-I का संदेश

प्रिय यूकोजन,

अभी तो असली मंजिल पाना बाकी है, अभी तो कई इम्तिहान बाकी हैं ।
अभी तो नापी है बस मुट्ठी भर जमीं हमने, अभी तो पूरा आसमां बाकी है ॥

वित्तीय वर्ष 2022-23 के अंतर्गत बैंक के सर्वोकृष्ट परिणाम के लिए आप सभी यूकोजन को हार्दिक बधाई!

हमारे बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी के कुशल व सक्षम नेतृत्व की बदौलत हमने बैंकिंग जगत में नया कीर्तिमान स्थापित कर पुरुषार्थ का गौरव गाथा लिखा है । इस सफलता का श्रेय हमारे बैंक के सभी स्टॉफ सदस्यों को जाता है जिन्होंने उच्च प्रबंधन तंत्र द्वारा सौंपे गए निर्धारित लक्ष्यों को पूरा किया है । आप सभी की लगनशीलता, कार्यकुशलता, समयनिष्ठा और उचित दिशा में कार्य करने के कारण ही हमारे बैंक को लाजवाब सफलता हासिल हुई है ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, बैंकिंग जगत चुनौतियों से भरा है । हमें नई तकनीक के साथ अद्यतित चीजों को आत्मसात करने की जरूरत है । किसी भी व्यवसाय वृद्धि के लिए ग्राहकों के साथ व्यवहारपरक और सौम्य तरीके से जुड़ना अत्यावश्यक होता है ।

हमें ग्राहकों की जरूरतों के अनुसार समय-समय पर अपने बैंकिंग उत्पाद को अद्यतित करते रहना होगा । सर्वोत्तम ग्राहक सेवा ही हमारे व्यवसाय वृद्धि का मूल मंत्र है । हमें अपने ग्राहकों को समग्र बैंकिंग सेवा से संस्तुष्ट करना होगा तभी वे हमारे व्यवसाय विस्तार में मददगार साबित हो सकते हैं ।

हमारी पूरी कोशिश हो कि हम अपने ग्राहकों को वित्तीय रूप से शिक्षित करें । वे अपने पैसे को कहाँ और कैसे निवेश करें ताकि भविष्य में मोटी राशि का समुन्नत उपयोग किया जा सके । हमें समय-समय पर वित्तीय साक्षरता शिविर का आयोजन कर ग्राहकों को पैसे के लेनदेन और सदुपयोग के बारे में उचित जानकारी प्रदान करनी होगी ताकि वे आर्थिक रूप से सशक्त हो सकें । हमारे बैंक ने ग्राहकों के जीवन में आर्थिक संपन्नता लाने और उनके व्यवसाय वृद्धि के लिए विभिन्न उत्पाद तैयार किया है । शाखाओं द्वारा आयोजित की जानेवाली ग्राहक सेवा समिति की मासिक बैठक में ग्राहकों को आर्थिक जागरुकता के तहत उन्हें जागरूक किया जाना चाहिए ।

हमें अपने कार्यों की गुणवत्ता में और ज्यादा नवीनता लानी होगी । नित नई ऊंचाइयों को छूने के लिए हमें अपने विचारों को बेहतरीन बनाना होगा क्योंकि विचारों की शुद्धता और सरलता ही हमें आम लोगों से बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित करती है ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

इशराक अली ख़ान

कार्यपालक निदेशक-II का संदेश

प्रिय यूकोजन,

'यूको अनुगूँज' के इस अंक के माध्यम से आपके साथ संवाद करने का पहला अवसर पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। देश के कोने-कोने में व्याप्त नेटवर्क वाले हमारे बैंक में संवाद के एक मजबूत तंत्र की आवश्यकता सदा ही रही है। इलेक्ट्रानिक संवाद माध्यमों के युग में भी मुद्रित संवाद माध्यम अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। छपे हुए अक्षरों तथा चित्र-विचित्र छवियों में हमारी भावनाएं न सिर्फ व्यक्त ही होतीं हैं वरन यादगार भी बन जातीं हैं। हम पत्रिकाओं को सिर्फ पढ़ते ही नहीं, उन्हें सँजोते हैं तथा समय के साथ-साथ उनके साथ सफर करते हैं।

मैं समझता हूँ कि कारोबारी परिवेश में गृह-पत्रिकाएं जनशक्ति को सुसंगठित करने तथा उसे समुचित दिशा देने के काम में हमारा सहयोग करतीं हैं। हमारे बैंक की गृह-पत्रिका 'यूको टावर' का प्रकाशन वर्ष 1965 में हुआ। इससे पता चलता है कि हमारे संस्थापकों ने संवाद के माध्यम के रूप में गृह-पत्रिका की आवश्यकता तब भी समझी थी। आज के चुनौतीपूर्ण कारोबारी परिवेश में संवाद की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो उठी है, अतः हमारी गृह-पत्रिकाओं को इस ओर ध्यान देना होगा।

हिंदी भारत में सबसे अधिक व्यवहार की जानेवाली भाषा है। मुझे विश्वास है कि हमारी हिंदी गृह-पत्रिका 'यूको अनुगूँज' हमारी अखिल भारतीय संवाद साधना को पुष्ट करेगी और कॉरपोरेट लक्ष्यों को प्राप्त करने में अधिकाधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं के साथ,

राजेन्द्र कुमार साबू

महाप्रबंधक, राजभाषा का संदेश

प्रिय यूकोजन,

हमारे बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी के मार्गदर्शन की वजह से हमारे बैंक के सुनहरे दिन लौट आए हैं। समस्त यूकोजन के कठिन परिश्रम, कार्य के प्रति तत्परता, लक्ष्य प्राप्ति का सम्पूर्ण विश्वास और कुछ विशेष करने के जज्बा की बदौलत हमारे बैंक ने वित्तीय वर्ष 2022-23 के तहत अत्युत्तम कार्य-निष्पादन किया है। यह आप सभी के उत्साहपूर्ण और बुलंदी के साथ किए गए कार्य से ही संभव हो पाया है। इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

लक्ष्य प्राप्ति के बाद हमारी जवाबदेही और ज्यादा बढ़ जाती है। ग्राहकों, निवेशकों और हितधारकों की अपेक्षाएँ हमसे ज्यादा बढ़ गई हैं। हमें बैंकिंग क्षेत्र में श्रेष्ठतम सेवाओं के साथ अपने अस्तित्व को बरकरार रखना होगा। ग्राहक आधार पर विशेष रूप से ध्यान देते हुए हमें सभी पीढ़ी को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ना होगा। हमें अपने ग्राहकों को बैंकिंग योजनाओं और उत्पादों के बारे में उन्हीं की भाषा में बताना होगा ताकि उनका झुकाव हमारी बैंकिंग गतिविधियों की ओर हो।

किसी विद्वान ने सच ही कहा है कि **"भाषा एक कल्पवृक्ष की तरह है, उससे जो भी मांगेगे, वह देती है।"** हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाओं में वे सभी गुण निहित हैं, जिससे इसे कार्यालयीन भाषा के रूप में आसानी से उपयोग किया जा रहा है। इसमें इतनी शक्ति एवं स्वीकार्यता है कि यह नित उन्नति के पथ पर अग्रसर होती जा रही है। खूबसूरत मंजिल वहीं होती हैं जिसमें सफलता और सुकून का ताना-बाना बुना हुआ होता है।

अगर रास्ता खूबसूरत हो तो पता करें कि वह किस मंजिल को जाता है
और अगर मंजिल खूबसूरत हो तो रास्ते की परवाह किए बगैर आगे बढ़ते रहें

भाषा की महत्ता तब और बढ़ जाती है जब हमें व्यवसाय में उत्तरोत्तर विकास करना होता है। आज बहुत सारी संस्थाएं व कंपनियाँ ऐसी हैं जिनके ऊपर राजभाषा का नियम लागू नहीं होता है फिर भी वे अपनी व्यवसाय वृद्धि और ग्राहक आधार को बढ़ाने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं और हिंदी का उदारतापूर्ण उपयोग कर रही हैं। मुनाफा कमाने के लिए निजी कंपनियाँ हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं की उपयोगिता समझ रही हैं। इसके पहले भारत में, बहुत सारी बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने व्यवसाय विस्तार के लिए अँग्रेजी भाषा के साथ आईं परंतु उनके व्यवसाय में उत्तरोत्तर वृद्धि नहीं हुई। उन कंपनियों ने हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का दामन थामा और तीव्र विकास के साथ अपने व्यवसाय में संवृद्धि हासिल की।

बैंकिंग एवं राजभाषा में सर्वोत्कृष्ट कार्य-निष्पादन के लिए पुनः आप सभी यूकोजन को बधाई!

शुभकामनाओं सहित,

मनीष कुमार

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

कहते हैं कि वही भाषा समृद्ध हो सकती है जिसे जनमानस अपना ले। यानी जो चले वही भाषा है। जिस भाषा में संप्रेषण आसानी से संभव हो, वह अपने आप बढ़ती रहती है। हिंदी की सरलता और सुगमता की वजह से विश्व बाजार में इसकी महत्ता बढ़ गई है। भारत एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर चुका है। भारतीय अर्थव्यवस्था में वस्तुओं की बढ़ती मांग और उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति ने विश्व बाजार का ध्यान भारत की ओर आकर्षित किया है।

साथियो, भाषा की मंजिल बहुत ही खूबसूरत है, हमें इसके रास्ते की परवाह किए बगैर आगे बढ़ते रहना चाहिए। हो सकता है इसमें कुछ कठिनाईयां आएँ परंतु हमें अपने कर्तव्यपथ पर निरंतर चलते हुए अपने देश की भाषा को ज्यादा से ज्यादा समृद्ध और सरल करना है ताकि हम देश की जनता के साथ भारतीय भाषाओं के माध्यम से प्रगाढ़ संबंध स्थापित कर सकें। हमें अपने ग्राहकों की भाषा-भावना को टटोलते हुए उनकी भाषा में सेवा प्रदान कर व्यवसाय में सतत वृद्धि का लक्ष्य साधना चाहिए।

हम सभी को यह सुनकर अत्यंत सुखद अनुभूति हुई है कि माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने हाल ही में यह निवेदन किया कि राज्य अपने संवाद के लिए अँग्रेजी के स्थान पर हिंदी भाषा को अपनाए। उनके इस कथन से राजभाषा हिंदी को विशेष बल मिला है। और हमारा विश्वास है कि वह दिन दूर नहीं जब हिंदी राज्यों के आपसी संवाद में अंग्रेजी का स्थान ले लेगी।

क्षेत्रीय भाषाएँ एवं हिंदी भाषा के माध्यम से ग्राहक एवं बैंकिंग को जोड़ने वाले संपर्क सेतु निर्माण में भाषा के विभिन्न मंचों यथा राजभाषा हिंदी के कार्यक्रम, राजभाषा कार्यशालाएँ, हिंदी सेमिनार / संगोष्ठियाँ, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति आदि का मार्गदर्शन अत्यंत सराहनीय रहा है।

मुझे अनुगूँज का नया अंक आपको सौंपते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही हैं। हमने इस अंक को बेहतरीन बनाने का पूरा प्रयास किया है। यह अंक 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' पर आधारित विशेषांक है जिसमें आज़ादी का अमृत महोत्सव : यूको बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष विषय पर विभिन्न आलेखों का संग्रह किया गया है। इसके अतिरिक्त गृह ऋण संवितरण से पूर्व ध्यान रखने योग्य बिन्दु, भाषा सौहार्द – बंगला भाषा और पुस्तक चर्चा को भी शामिल किया गया है।

हम आशा करते हैं कि 'अनुगूँज' का यह अंक आपको बहुत पसंद आएगा। आपसे अनुरोध है कि इस पत्रिका को और अधिक आकर्षक और ज्ञानवर्धक बनाए रखने के लिए हमें अपने बहुमूल्य विचारों और प्रतिक्रियाओं से अवगत कराते रहें ताकि हम अगले अंक में कुछ विशेष शामिल कर सकें।

शुभकामनाओं सहित,

अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी

बैंकिंग लेख

आवास ऋण और कारोबार के अवसर

मनीष त्रिपाठी
मुख्य प्रबंधक - रिटेल ऋण हब
अंचल कार्यालय, कानपुर

किसी भी बैंक शाखा के ऋण पोर्टफोलियों को बढ़ाने में गृह ऋण एक स्तंभ का काम करता है। गृह ऋण स्वीकृति करने के लिए कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य हैं जिन पर ध्यान देना हमारे लिए अत्यावश्यक है। प्रधान कार्यालय द्वारा भी समय-समय पर इस संदर्भ में अपने परिपत्रों के माध्यम से हमें निर्देशित किया जाता है। इस संबंध में महत्वपूर्ण बिन्दु इस प्रकार हैं–

योजना के अनुसार दस्तावेज़ीकरण से संबंधित औपचारिकताओं को पूरा करने पर ऋण का संवितरण किया जाएगा और लोन के वितरण से पहले ईएमटीडी रजिस्टर पर प्रभार का निर्माण किया जाना चाहिए।

शाखा को आरबीआई के दिशानिर्देशों के अनुसार वर्तमान बाजार मूल्य पर एलटीवी अनुपात (75%/80%/90% ऋण की स्वीकृत राशि के अनुरूप) सुनिश्चित करना चाहिए।

भुगतान/संवितरण विक्रेता के पक्ष में खरीद मूल्य के आधार पर भुगतान आदेश/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा किया जाना चाहिए और बिक्री के समझौते में विक्रेता और आवेदक के बीच भुगतान की शर्तों के अनुसार भुगतान किया जाना चाहिए एवं भुगतान आदेश/डिमांड ड्राफ्ट बिल्डर/विक्रेता के बैंकर के नाम से जारी किया जाना चाहिए जिसमें बैंक खाता संख्या अंकित हो।

पे ऑर्डर/ड्राफ्ट ऋण प्राप्त कर्ता/विक्रेता के एजेंट को नहीं सौंपा जाना चाहिए। बैंक के अधिकारियों को रजिस्ट्री के समय संपत्ति के बिल्डरों/विक्रेताओं को उनके पंजीकृत पते पर लिखत की सुपुर्दगी के लिए भेजा जा सकता है।

उधारकर्ता से एक वचनबद्धता प्राप्त की जानी चाहिए कि वह एक उचित अवधि के भीतर मूल हक विलेख जमा करेगा या बैंक को सीधे रजिस्ट्रार से दस्तावेज एकत्र करने के लिए अधिकृत करेगा। मूल हक विलेख जमा करने में देरी के मामले में विलंब की अवधि के लिए 2% दंडात्मक ब्याज लगाया जाता है।

शाखा यह सुनिश्चित करें कि ऋण का संवितरण करते समय मार्जिन बनाए रखा जाता है और इसे हमारे बैंक खाते के माध्यम से भेजा जाना चाहिए।

ऋण राशि के वितरण से पहले खर्च किए गए मार्जिन/अग्रिम भुगतान का संतोषजनक प्रमाण प्राप्त किया जाना चाहिए और रिकॉर्ड में रखा जाना चाहिए।

ऋण प्राप्तकर्ता से शाखा को उस घर/फ्लैट की एक तस्वीर प्राप्त करनी चाहिए जिसके लिए ऋण दिया गया है और उसे ऋण दस्तावेज़ों के साथ सुरक्षित रखना चाहिए।

शाखा द्वारा ऋण प्राप्तकर्ता द्वारा उपलब्ध कराए गए सभी दस्तावेज़ों की सत्यता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

ईएमआई के भुगतान में एक महीने या उससे अधिक की देरी के मामले में 2% प्रति वर्ष की दर से अवधि के चूक की राशि पर दंडात्मक ब्याज प्रभारित किया जाता है, इस संबंध में ऋण प्राप्तकर्ता को जानकारी दी जानी चाहिए।

ईएमआई के भुगतान में एक महीने या उससे अधिक की देरी के मामले में 2% प्रति वर्ष की दर से अवधि के चूक की राशि पर दंडात्मक ब्याज प्रभारित किया जाता है, इस संबंध में ऋण प्राप्तकर्ता को जानकारी दी जानी चाहिए।

उधारकर्ताओं/सह-बाध्यताकारी को क्रेडिट सूचना ब्यूरो (इंडिया) लिमिटेड (सीआईबीआईएल) को क्रेडिट सूचना के प्रसार के लिए ऋण दस्तावेज के रूप में सहमति खंड को प्रधान कर्यालय परिपत्र संख्या सीएचओ/आर एम/43/2013-14 दिनांक 22/02/2014 के तहत निर्धारित प्रारूप के अनुसार निष्पादित करना होगा। जैसा कि बैंक उचित समझेगा किसी नियम और शर्त में संशोधन/समीक्षा/कोई नई दशा जोड़ने का अधिकार बैंक के पास सुरक्षित होगा।

प्रधान कार्यालय के परिपत्र सं. सीएचओ/आरबीडी/19/2014-15, दिनांक 10.03.2015 के अनुसार प्रत्येक गृह ऋण की सरसयी रिपोर्ट भी सृजित की जानी चाहिए।

बैंक के पास समय-समय पर निर्धारित नियमों और शर्तों के गैर-अनुपालन/उल्लंघन या प्रासंगिक दस्तावेज या दी गई कोई भी जानकारी/विवरण गलत पाया गया या किसी विकास या स्थिति के मामले में जिसमें बैंक की राय उसके हित ऐसी निरंतरता या संवितरण से पूर्व-विवेकपूर्ण रूप से प्रभावित होने की संभावना है, की दशा के मामले में, बिना किसी सूचना के किसी भी सुविधा को रोकने/अग्रिम/ऋणों को बंद करने का अधिकार सुरक्षित है।

उधारकर्ता बैंक की संपूर्ण देय राशि का भुगतान किए बिना संपत्ति पर कोई और प्रभार नहीं लगाएगा। इसके अलावा, उधारकर्ता को संपत्ति के विकास/विस्तार के लिए किसी भी उधार व्यवस्था में प्रवेश करने से पहले बैंक का पूर्वानुमोदन प्राप्त करना होगा।

उधारकर्ता के जीवन और प्रस्तावित संपत्ति का बैंक के चैनल पार्टनर के साथ अनिवार्य रूप से बीमा किया जाना चाहिए।

योजना की आवश्यकता के अनुसार उधारकर्ताओं और केवाईसी दस्तावेजों की पहचान अत्यंत सतर्कता से की जानी चाहिए।

सिबिल अनुलग्नक - 1 और प्राप्त रिपोर्ट को शाखा अधिकारियों द्वारा सत्यापित किया जाना चाहिए।

शाखा द्वारा निधि के अंतिम उपयोग को सत्यापित करना चाहिए। शाखा को सभी दस्तावेजों पर आवेदक/सह-आवेदक के पूर्ण हस्ताक्षर प्राप्त करने चाहिए।

आवेदकों/सह-आवेदकों की पारिवारिक घोषणा शाखा को प्राप्त करनी चाहिए। शाखा को बैंक के मौजूदा दिशानिर्देशों के अनुसार संवितरण पूर्व निरीक्षण रिपोर्ट (पीडीआईआर) तैयार करनी चाहिए।

शाखा को सभी शृंखला विलेखों की सभी प्रमाणित प्रतियाँ ऋण दस्तावेजों के साथ रखनी चाहिए।

शाखा को आवेदक/सह-आवेदक से घोषणा प्राप्त करनी चाहिए कि वे बैंक स्टाफ/बैंक के निदेशकों/वरिष्ठ अधिकारियों के निकट संबंधी नहीं हैं।शाखा को उधारकर्ता/गारंटर से यह वचन पत्र प्राप्त करना होगा कि ऋण की अवधि के दौरान कंपनियों/फर्मों में निवेश की गई निधि की निकासी नहीं की जाएगी।

संपत्ति का आवधिक निरीक्षण बैंक के दिशानिर्देशों के अनुसार किया जाना चाहिए।

सीएमआर-6ए संवितरण की अनुमति एवं स्वीकृति के नियम एवं शर्तों के अनुपालन के लिए सीएमआर-6 बी फार्मेट में अंचल कार्यालय को प्रेषण करना चाहिए। ऋण स्वीकृति, स्वीकृति की तारीख से 180 दिनों के लिए ही वैध होती है। ■

विशेष लेख

आज़ादी का अमृत महोत्सव: बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष

अभिजीत दास
पूर्व-अंचल प्रबंधक
अंचल कार्यालय, जोरहाट

जिस तरह अशोक की लाट, राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा एवं राष्ट्रीय पक्षी मयूर हमारे राष्ट्रीय प्रतीक हैं, वैसे ही राजभाषा हिंदी हमारे राष्ट्र के अनुपम प्रतीकों में से एक है। यह एक जीवंत प्रतीक है जो देशवासियों के दिलों में धड़कती है, उनके प्राणों में बसती है। देश की अधिकांश जनता हिंदी समझती है, बोलती है, वहीं साक्षर जनसंख्या का एक बहुत बड़ा अंश हिंदी पढ़ता और लिखता है। हिंदी भारत की राष्ट्र-निष्ठ परंपरा का एक सशक्त विकासमान घटक है और इसकी कहानी वर्ष 1947 में आज़ादी मिलने से कहीं पहले, आज़ादी की चेतना के उदीयमान होने के साथ ही शुरू हो जाती है।

हिंदी वह भाषा है जिसने आज़ादी के मतवालों को एक-दूसरे के साथ सूत्रबद्ध करने की विलक्षण भूमिका निभाई है, जिसने विभिन्न क्षेत्रीयताओं को आत्मसात कर अभिव्यक्त करने का बीड़ा उठाया है। इसलिए आज जबकि हम आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, हमें आज़ादी के संघर्ष में हिंदी के जन-जनव्यापी महत्त्व को भी स्मरण करना चाहिए। हिंदी के उन्नयन में हिंदी प्रदेशों से संबंधित प्रतिभाओं के अलावा सर्वश्री लाला लाजपत राय, महात्मा गांधी, महर्षि दयानंद, विनोबा भावे, काका कालेलकर, गोपालकृष्ण गोखले, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, सर्वेपल्ली राधाकृष्णन, स्वामी विवेकानंद, अरविंद घोष, कविगुरु रवींद्रनाथ टैगोर, राजा राममोहन राय, नेताजी सुभाष चंद्र बोस जैसे हिंदीतरभाषी राष्ट्र नेताओं, समाज-सेवियों, चिंतकों और क्रांतिकारियों की भी स्तुत्य भूमिका है। हिंदी को आज़ादी के पहले से ही देश के चप्पे चप्पे पर सिर-आँखों पर लिया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश की स्वाधीन संसद में सांसदों द्वारा विस्तृत चर्चा के बाद सर्वसम्मति से हिंदी को राजभाषा स्वीकार किया जाना आश्चर्यजनक नहीं है।

आज़ादी मिलने के बाद हिंदी को राजभाषा की पदवी मिली और उसी के साथ हिंदी को संप्रसारित करने के प्रशासनिक ओर से प्रयासों का भी शुभारंभ हो गया। गृह मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय, विधि मंत्रालय और रेलवे वे क्षेत्र थे जिनमें राजभाषा कार्यान्वयन की मुहिम सबसे पहले शुरू हुई। धीरे-धीरे,व्यवस्थाएँ स्वरूपित होती चलीं। कुछ बाद में अस्तित्व में आया राजभाषा नियम, 1976 एक व्यापक कदम था जिसमें सरकारी ही नहीं, अधीनस्थ, निगम एवं उपक्रम कार्यालयों सहित सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में भी राजभाषा में काम कराने के लिए प्रशिक्षण, उपकरण, अनुवाद, मानदेय, रिपोर्टिंग, दायित्व आदि विविध पहलुओं पर कामकाजी परिपाटियाँ बनाई गईं।

अन्य कार्यालयों की तरह हमारे बैंक में भी हिंदी का विकास इसी पटरी पर बढ़ता आ रहा है। जहाँ भी कार्यालयीन साहित्य

है, बैंक में हिंदी की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए अपेक्षित कदम उठाए गए हैं। समय-समय पर अन्य प्राधिकारियों के अलावा संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति ने भी हमारे बैंक के कार्यालयों में राजभाषायी निरीक्षण किया है और अपनी रिपोर्ट भारत के महामहिम राष्ट्रपति को प्रस्तुत की है।

सार्वजनिक क्षेत्र का बैंक होने के नाते राजभाषा हिंदी से संबंधित अपेक्षाओं के अनुपालन के उद्देश्य से वर्ष 1971-72 से ही तंत्र विकसित करने के प्रयास शुरू किए गए। प्रधान कार्यालय के राजभाषा विभाग में उपलब्ध साक्ष्य के अनुसार हमारे बैंक की प्रथम राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 17 फरवरी, 1974 को हुई थी। जाहिर है कि संविधान में व्यक्त राजभाषा अधिनियम एवं विनियम आदि में प्रदत्त दिशानिर्देशों को कार्यक्षेत्र प्रदान किए जाने का अभियान तभी से प्रारंभ हो गया था।

हिंदी का कार्य अन्य पारंपरिक कार्यालयीन कार्यों से कुछ अलग प्रकृति का है। इसमें लोगों को हिंदी में कामकाज करने के प्रति उत्साहित बनाए रखने हेतु वातावरण तैयार करने का महत्त्व वास्तव में हिंदी में कार्य होने जितना ही है। लोगों को हिंदी प्रशिक्षण हेतु मानदेय देना, हिंदीतर भाषियों को हिंदी में कार्य करने के लिए वार्षिक प्रोत्साहन राशि देना, हिंदी एवं अन्य प्रतियोगिताएं आयोजित करना एवं उत्कृष्ट प्रतिभागियों को पुरस्कृत करना,हिंदी दिवस एवं अन्य सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से भारत की सामासिक संस्कृति का दिग्दर्शन कराना और हिंदी की भाषा-परंपरा के अंतर्संबंधों पर प्रकाश डालना, हिंदी को अपने कार्य में प्राथमिकता देनेवाले कार्मिक को केवल हिंदी अपनाने के लिए ही प्रबंधन द्वारा प्रशंसनीय मानना और घोषित करना – ये कुछ ऐसे उपाय हैं जो भारत की राजभाषा नीति के अनुपालन में हमारे बैंक द्वारा शिद्दत के साथ अपनाए गए हैं। राजभाषा अधिकारी के द्वारा शाखाओं एवं कार्यालयों का राजभाषा निरीक्षण, संबंधित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति में सक्रिय सहाभागिता, हिंदी कार्यशाला एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति का विभागवार एवं कार्यालय-शाखावार आयोजन करने जैसे अनिवार्य प्रशासनिक उपाय तो निष्ठापूर्वक किए ही गए हैं।

समय-समय पर हमारे बैंक ने कुछ पहलों का भी प्रवर्तन किया। जब हिंदी सॉफ्टवेयर धीरे-धीरे भारत में पांव पसार रहा था, हमारे बैंक के शीर्ष राजभाषा नेतृत्व ने हिंदी यूनीकोड की विश्वजनीन प्रस्थापना से काफी पूर्व ही प्रधान कार्यालय के विभागों और अंचल कार्यालयों में हिंदी सॉफ्टवेयर की उपलब्धता सुनिश्चित की और प्रानितिधिक तौर पर अपने राजभाषा अधिकारियों को हिंदी सॉफ्टवेयर लोड करने और उससे काम लेने की बारीकियाँ सिखायीं। कहीं न कहीं इसके पीछे यह दूरदृष्टि काम कर रही थी कि जल्द ही हिंदी का कामकाज हाथ की गिरफ्त से निकलकर कंप्यूटर के की-बोर्ड के जरिए होने लगेगा। हम जानते हैं कि हमारे बैंक के राजभाषा परिवार ने सरकारी प्रतिष्ठानों और दूसरे बैंकों में भी हिंदी सॉफ्टवेयर का प्रशिक्षण एवं अन्य आवश्यक साहाय्य प्रदान किया है। जब हिंदी एवं अन्य भाषाओं में यूनीकोड की सत्ता को स्वीकार किया जाने लगा, तब भी हमारे बैंक ने यूनीकोड की विशिष्टताओं को सीखा और सिखाया तथा अपने पहले के टंकण के अभ्यासों में ही नए-नए समावेश किए। हमारी ये तैयारियाँ ऐसी-ऐसी मुस्तैदी से हुईं कि हमें राजभाषा कार्यान्वयन के तकनीकी मामलों में कभी भी विपन्नता का अनुभव नहीं करना पड़ा, न ही हमारी स्थिति कभी परमुखापेक्षियों जैसी हुई। हम आसानी से तकनीकी दक्षता और यंत्र संपन्नता की ओर बढ़ते चले। यही बात मंत्र सॉफ्टवेयर, स्पीच-टू-टेक्स्ट, हिंदी एवं अन्यभाषी शब्दकोश एवं शब्दावली, बहुभाषी अनुवाद,ऑनलाइन प्रतियोगिताएँ एवं रिपोर्टिंग, ऑनलाइन-ऑफलाइन पत्रिकाओं एवं अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों, और अंतत: "कंठस्थ" के विषय में भी आश्वस्त होकर कही जा सकती है।

इसके अलावा, संकेत रूप में इस बात का भी उल्लेख किया जाना चाहिए कि आर्थिक संघर्ष एवं आंतरिक मजबूती को सुनिश्चित करने की यदा-कदा आनेवाली परीक्षा की घड़ियों के आते रहने के बावजूद हमारे बैंक के शीर्ष नेतृत्व ने हिंदी कामकाज को अपनी कार्यप्रणाली का एक अविभाज्य अंग बनाए रखा है। विशेषकर वर्ष 2018 के बाद से तो राजभाषा की गतिविधियों का पूरा का पूरा तंत्र इतनी सूक्ष्मता और सक्षमता के साथ उभरा है जिसे विकास की इंतेहा कहना

कहीं भी अतिशयोक्ति नहीं हो सकती। राजभाषा को केवल बैंक के कार्यालय परिक्षेत्र की विषयवस्तु तक सीमित न रखते हुए, समुद्र पार की भूमियों तक भी उसकी पड़ताल की गई है। साथ ही देश के विभिन्न प्रांतों-प्रांतरों तक पहुँचकर, हिंदी के अनन्य सेवियों तक पहुँचकर उनके अंतर्मन को टटोलने का उपक्रम किया गया है। राजभाषा सम्मानों की देशव्यापी परिपाटी स्थापित की गई है! जिस तरह विभिन्न राजभाषा कार्यक्रमों में, विशेषकर कोरोना के प्रकोप के बाद के आंतरिक एवं बाह्य ऑनलाइन आयोजनों में शीर्ष नेतृत्व, यहाँ तक कि स्वयं प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय तक की उपस्थिति सुलभ हुई है, वह अपने आप में निश्चय ही अभूतपूर्व है, और इस बात की तसदीक गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के साथ ही अन्य हमसफर कार्यालयों ने भी बारंबार की है। हिंदी को किसी भी कार्यालय के सर्वोच्च नेतृत्व द्वारा सुसंगत महत्त्व दिया जाना और उसका दायित्व महसूस किया और कार्य में परिणत किया जाना ही तो वस्तुत: भावना है जिसे राजभाषा नियमों का आधार भाव कहा जाना चाहिए और ऐसा हो जाने पर राजभाषा कार्यों में एक विलक्षण गांभीर्य आना तय है। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो हमारे बैंक के प्रधान कार्यालय को बैंक और आर्थिक संगठन श्रेणी में वित्तीय-वर्ष 2020-21 के दौरान जो राजभाषा कीर्ति पुरस्कार-प्रथम प्राप्त हुआ है–उसे राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में बैंक के राजभाषा नेतृत्व द्वारा अख्तियार किए गए तेवर की स्वाभाविक परिणति के रूप में भी देखा जा सकता है ■

बोध कथा

जीवन की बारीक समझ

स्वामी विवेकानंद देश - विदेश में भी चर्चित हो चुके थे। उनको विदेश से एक सेमिनार में बोलने के लिए बुलाया गया।

माँ को जब विवेकानंद के विदेश जाने की बात पता चली, तो उन्होंने विवेकानंद से कहा, आज तुम घर खाने आओ। मैं देखना चाहती हूँ कि तुम अभी विदेश जाकर सेमिनार में बोलने लायक परिपक्व हुए हो या नहीं। स्वामीजी ने खाना खाया। फिर माँ ने उनको एक सेब और एक चाकू भी दिया। स्वामीजी ने सेब काटा और खा लिया। फिर माँ ने उनसे चाकू वापस मांगा। स्वामीजी ने माँ को चाकू दे दिया। माँ ने कहा, बेटा, मैं आश्वस्त हूँ कि तुम विदेश जाकर लोगों को ज्ञान देने के लायक हो गए हो। स्वामीजी आश्चर्य से बोले, माँ, कैसे ? माँ बोली, बेटा, अभी मैंने तुमसे चाकू मांगा, तुमने चाकू की धार की ओर से पकड़कर चाकू की मूठ मेरे सामने कर दी, ताकि मैं इसे आराम से पकड़ सकूँ और मुझे घाव न लगे। तुमने इस बात की परवाह नहीं की कि तेज धार से तुम्हें भी घाव लग सकती थी, तुम इस परीक्षा मे उत्तीर्ण हुए। जाओ, दुनिया में अपने ज्ञान का प्रसार करो।

विशेष लेख

आज़ादी का अमृत महोत्सव: बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष

अमित राज
अंचल प्रबंधक
अंचल कार्यालय, भोपाल

स्वतंत्रता पाने एवं स्वतन्त्र रहने की इच्छा प्राणियों का प्रकृति प्रदत्त गुण है। कोई भी प्राणी स्वतन्त्र रहकर ही प्रसन्न रहता है। कई सौ वर्ष तक अंग्रेजों की दासता में जकड़े रहने के बाद स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों द्वारा दिए गए बलिदानों व कई वर्षों के संघर्ष के बाद 15 अगस्त 1947 को हमारे देश ने स्वतंत्रता प्राप्त की।

इस स्वतंत्रता के लिए, अंग्रेजों से भारतवर्ष को मुक्त कराने के लिए देशवासियों को कई आन्दोलन चलाने पड़े, अपने सुख-साधनों का त्याग करना पड़ा और अनेक अवसरों पर अपना रक्त बहाना पड़ा, असंख्य कुर्बानियों के पश्चात ही अंग्रेजों ने भारत की बागडोर भारतवासियों को सौंपी है। स्वतंत्रता प्राप्त होते ही सम्पूर्ण देश में हर्षोल्लास की लहर व्याप्त हो गई। 'भारतमाता की जय' के नारों से सारा भारत गूँज उठा, दीपमालाओं के प्रकाश से सारा भारत जगमगा उठा। पूरे देश में उत्सव का वातावरण निर्मित हो गया। तब से लेकर प्रतिवर्ष इस पावन दिन को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है एवं प्रत्येक 25 वर्षों में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

वर्ष 2021 में भारत देश की आजादी की 75वीं वर्षगाँठ की खुशी में हम अमृत महोत्सव मना रहे हैं। आजादी का महोत्सव किसी विशेष जाति, धर्म अथवा राज्य के लिए नहीं, वरन सम्पूर्ण देश के लिए है। यह राष्ट्रीय महोत्सव है, जो हमें याद दिलाता है कि देश के सच्चे सपूतों ने अपना सब कुछ न्योछावर करके भारतमाता को स्वतन्त्र कराया था, साथ ही नई पीढ़ी को अपनी आजादी के इतिहास एवं महत्व से अवगत कराता है। आजादी का अमृत महोत्सव का उद्घाटन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 12 मार्च, 2021 को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से देश की आजादी की 75वीं वर्षगाँठ से 75 सप्ताह

पहले किया गया था। यह महोत्सव 15 अगस्त 2023 तक समस्त देश में मनाया जाएगा। 78वें स्वतंत्रता दिवस पर इसका समापन होगा, इस दौरान भारत सरकार व राज्य सरकारों द्वारा देशवासियों की जनभागीदारी से अलग-अलग आयोजन किए जाएंगे।

आजादी का अमृत महोत्सव भारत की विरल उपलब्धि है, हमारी जागती आँखों से देखे गए स्वप्नों को आकार देने का विश्वास है, हमारे जीवन मूल्यों को सुरक्षित करने एवं नया भारत निर्मित करने की तीव्र तैयारी है।

स्वतन्त्र भारत के निर्माताओं ने जिस सूझबूझ, कर्मठता, साहस के साथ परिस्थितियों का सामना किया, आज उसी सूझबूझ, कर्मठता, साहस के साथ इन समस्याओं का सामना करने की आवश्यकता है। यह अत्यंत आवश्यक है कि देश की प्रगति में बाधक समस्याओं को हमेशा के लिए मिटाकर राष्ट्रीयता और एकता को सर्वोपरि रखें। जीवन में नैतिकता एवं आत्मनिर्भरता को स्थापित करने की आवश्यकता है।

संघर्षों से जूझने की क्षमता भारत में उदयकाल से ही विद्यमान है। आज तक इसके सामने चाहे जैसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई हों, अवरोध उपस्थित करने वाली शक्तियां इसके सामने नहीं टिक पाईं। अब उन सब अवरोधक स्थितियों से बाहर निकलते हुए अपना रास्ता स्वयं खोजते हुए हम आत्मनिर्भर भारत, नए भारत और सशक्त भारत के रास्तों पर अग्रसर हैं।

निराशाओं के बीच आशाओं के दीप जलने लगे हैं, यह शुभ संकेत है। नए विचारों, नए मानवीय संबंधों, नए सामाजिक संगठनों, नए रीति रिवाजों के साथ राष्ट्रीय चरित्र निर्मित हो रहा है, राष्ट्र सशक्त हो रहा है। आजादी के 75वें वर्ष में 'मेक इन इंडिया' के माध्यम से हम आत्मनिर्भर भारत निर्माण की ओर अग्रसर हैं। नई खोजें, दक्षता, कौशल विकास, बौद्धिक संपदा की रक्षा, स्वदेशी उत्पादन, श्रेष्ठ का निर्माण इस क्षेत्र की चुनौतियां हैं।

स्वयं की पहचान, तथा अपनी सुप्त शक्तियों को जगाना आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाने के लिए आवश्यक है। राष्ट्र के प्रति समर्पित होकर कर्तव्य-परायणता की भावना का परिचय देना चाहिए, ताकि हमारा देश एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभर सके। समस्त देशवासियों को एकजुट होकर दृढ़ता एवं ईमानदारी से कार्य करना होगा तभी आत्मनिर्भरता का स्वप्न साकार होगा।

देश के स्वाधीनता आन्दोलन में हिंदी की सक्रिय भागीदारी रही है। अधिकांश हिन्दीभाषी क्षेत्रों में यह स्वतंत्रता आन्दोलन की संवाहिका रही है। इसलिए स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने अपनी मातृभाषा के स्थान पर हिंदी को ही अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। हिंदी की मूल शक्ति इसका सामासिक रूप है जो जाति, धर्म-सम्प्रदाय और क्षेत्र की सीमाओं का अतिक्रमण करता है। वस्तुत: हिंदी पूरे राष्ट्र को जोड़ने एवं एकता के सूत्र में बांधने वाली संपर्क भाषा है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी भाषा के प्रश्न को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रश्नों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। उन्होंने प्रारंभ से ही हिंदी को स्वतंत्रता संग्राम की भाषा बनाने के लिए अथक परिश्रम किया। स्वतंत्रता के इस संघर्ष में हिंदी की विभिन्न साहित्यिक रचनाओं ने अपना भरपूर योगदान दिया। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय जनमानस में एक नई ऊर्जा का संचार किया। हिंदी की कई ऐसी रचनाएँ रही हैं, जिन्होंने जन-जन में भारतीय गौरव बोध एवं मानवीय मूल्यों का संचार कर दिया।

हिंदी के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने भी स्वाधीनता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाल गंगाधर तिलक के 'केसरी' और 'मराठा', माखनलाल चतुर्वेदी के 'कर्मवीर' और 'प्रताप', राजा राममोहन राय का 'बंगदूत', भारतेंदु हरिश्चंद्र का 'हरिश्चंद्र मैगजीन'. कविवचन सुधा', लाला लाजपतराय का 'वन्दे मातरम्' आदि अनेक पत्र-पत्रिकाओं में सामाजिक कुरीतियों व स्थानीय समस्याओं का प्रकाशन किया जाता था।

स्वतंत्रता प्राप्त के पश्चात् हिंदी को राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक एवं जनसामान्य द्वारा सर्वाधिक बोली-समझी जाने वाली समृद्ध भाषा के रूप में 14 सितम्बर सन् 1949 को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया।

भारत सरकार द्वारा बैंकों में राजभाषा नीति का अनुपालन करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई। 80 के दशक में अधिकतर बैंकों में राजभाषा विभाग ने कार्य करना प्रारंभ किया। 90 के दशक

की शुरुआत में बैंकों में कम्प्यूटर का आगमन हो चुका था। कम्प्यूटरीकरण से हिंदी का मार्ग अवरुद्ध ही हुआ क्योंकि बैंकिंग के जो कार्य मैन्यूअल रूप में हिंदी में हो रहे थे, वे सभी धीरे-धीरे अंग्रेजी में होने लगे।

पिछले तीन दशक बैंकिंग क्षेत्र में आमूल परिवर्तन के परिचायक रहे हैं। बैंकिंग के तरीकों, उत्पादों, माध्यमों, कार्यप्रणाली में कई बदलाव आए, एक ओर बैंकों द्वारा प्रौद्योगिकी आधारित नित नई योजनाएं लागू की जा रही है, वहीं दूसरी ओर बैंकिंग सेवाओं से वंचित समाज के बड़े वर्ग को वित्तीय समावेशन के द्वारा बैंकिंग के साथ जोड़ने का प्रयास हो रहा है, यहाँ पर भाषा की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण हो जाती है। यह आवश्यक है कि हम राजभाषा के प्रभावी माध्यम का प्रयोग उन लोगों तक पहुंचने के लिए करें, जो बैंकिंग सेवाओं से वंचित हैं।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में विभिन्न ई-टूल्स जैसे यूनिकोड, लीला स्वयं शिक्षण सॉफ्टवेयर, श्रुतलेखन, ई-महाशब्दकोश, स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' आदि की सहायता से बैंकिंग कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की सुविधा उपलब्ध है, आवश्यकता है कर्मचारियों को इन ई-टूल्स का अधिकाधिक प्रयोग करने में सक्षम बनाने की।

आजादी के अमृत महोत्सव के साथ ही हमारे बैंक के राजभाषा विभाग की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के कारण भी यह वर्ष महत्वपूर्ण है। यूको बैंक में राजभाषा विभाग वर्ष 1972 से कार्य कर रहा है।

प्रारंभ से ही केंद्र सरकार द्वारा लागू सभी प्रावधानों का अनुपालन करते हुए बैंक के प्रधान कार्यालय एवं विभिन्न अंचलों में राजभाषा कार्यान्वयन किया जाता रहा है। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग तथा वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन एवं अनुवर्ती कार्रवाई में तेजी आने के बाद हमारे बैंक में भी राजभाषा का प्रयोग बढ़ा है। विशेष रूप से, वर्ष 2019-20 से राजभाषा कार्य-योजना को अंगीकार करने के बाद बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन में अभूतपूर्व प्रगति आई है।

राजभाषा कार्य-योजना के तहत बैंक द्वारा विभिन्न नई मदों पर कार्य प्रारंभ किया गया है :-

1. अपने संस्थापक श्री घनश्याम दास बिड़ला के नाम से यूको बैंक जी.डी.बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला का आयोजन।
2. अनुच्छेद 351 की भावना के तहत किसी लोकप्रिय हिंदी कार्यक्रम को सहयोग।
3. हिंदी एम.ए. परीक्षा में विश्वविद्यालय स्तर पर शीर्ष स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को यूको राजभाषा सम्मान।
4. राज्य सिविल सेवा आयोग परीक्षा हिंदी माध्यम से पास करने वाले शीर्ष दो अभ्यर्थियों को यूको मातृभाषा सम्मान।
5. किसी प्रसिद्ध हिंदी/क्षेत्रीय भाषा साहित्यकार के नाम पर भाषा-सेतु सम्मान।
6. बैंक की सम्पूर्ण बेवसाइट हिंदी में तैयार की गई है, जो प्रारंभ करने पर हिंदी में ही खुलती है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त सभी कार्यालय एवं शाखाओं द्वारा राजभाषा ऑनलाइन रिपोर्टिंग, यूको दैनिकी एवं यूको मासिकी पत्रिकाओं का प्रकाशन आदि कई कार्य बैंक द्वारा किए जा रहे हैं।

उच्च प्रबंधन का सहयोग एवं सभी के समेकित प्रयासों के परिणामस्वरूप वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिए प्रधान कार्यालय को 800 से कम कार्मिक वाले वर्ग में राजभाषा के क्षेत्र में सर्वोच्च सम्मान **'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार'**- प्रथम प्राप्त हुआ है।

निस्संदेह यह गौरव की बात है, परंतु इससे हमारा उत्तरदायित्व बढ़ गया है। बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्षों में आज हम जिस स्थान पर पहुंचे हैं, प्रतिस्पर्धा के इस युग में उस पर बने रहना एक चुनौती है। उस स्थान पर बने रहने एवं आगे बढ़ने के लिए हमें अपने राजभाषा कार्यान्वयन को प्रत्येक स्तर पर अधिक सुदृढ़ एवं उन्नत बनाना होगा।

देश की स्वतंत्रता के 75 वर्ष एवं यूको बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण होने के कारण निश्चय ही ये वर्ष हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, हमें अपने देश एवं अपनी भाषा की निरंतर प्रगति के लिए दृढ़ संकल्पित होकर सार्थक प्रयास करने होंगे। ■

विशेष लेख

आज़ादी का अमृत महोत्सव: बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष

डॉ. रजनी गुप्त
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, लखनऊ

आजादी के आंदोलन में हिंदी में रची गयी दर्जनों ऐसी प्रेरक रचनाएं हमारे सामने आई जिन्हें पढ़ते हुए हमारे अंदर वीर रस का संचार होता था। जैसे पुष्प की अभिलाषा-चाह नही मैं सुरवाला के गहनों में गूंथा जाऊं, चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूं, भाग्य पर इठलाऊं, मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ में देना तुम फेंक, मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।

वंदे मातरम, वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो, जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है, वह नर नहीं, नर पशु निरा और मृतक समान है। यथास्थितिवाद से उबरने के लिए क्रांतिकारी चेतना की आवश्यकता पड़ती है और जनभाषा हिंदी में रचा गया साहित्य हमारे अंदर उत्साह, शक्ति, आनंद और सोयी भावना को जाग्रत करके संघर्ष से लड़ने की सीख देता है। गोरख पांडे जैसे जन कवि ने लिखा है-

जन मन के विशाल सागर में, फैले प्रबल झंझा के स्वर में
चरण चरण विप्लव की गति दो, लय/लय प्रलय करो।

हिंदी में ऐसी ताकत हैं जिसमें रचा गया साहित्य हमें अवसाद व हताशा से उबारता है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, दिनकर, महादेवी वर्मा, प्रेमचंद, निराला, केदारनाथ अग्रवाल और नागार्जुन तक की लंबी फेहरिस्तह है जब हम हिंदी साहित्य के सुनहरे हस्ताक्षरों में दर्ज आज के समय की धड़कनों को बखूबी सुन सकते हैं।

सरकारी कार्यालयों/बैंकों, उपक्रमों में उपयोग की जाने वाली हिंदी का रूप व्यावसायिक है। आज की हिंदी पर बाजार का भी बेहद दबाव है इसलिए हिंदी का प्रयोग बाजार की शक्तियों से भी परिचालित है। पत्रकारिता, जनसंचार, मीडिया, बैंकिंग तथा अर्थजगत-इन समस्त क्षेत्रों में हिंदी के प्रयोग में आमूल चूल बदलाव दिखायी देता है। भारतेन्दु के जमाने से अब तक की हिंदी की भाषिक यात्रा का विश्लेषण करें तो हम पाते हैं कि हिंदी ने जमाने के साथ-साथ कई छवियां बदली हैं और आज हिंदी जिस नई चाल में ढलती दिखायी पड़ती है उस पर एक तरफ संस्कृतनिष्ठता का तो दूसरी तरफ अंग्रेजियत का गहरा असर है। सरकारी कार्यालयों में शब्द-निर्मिति का आधार मूलत: संस्कृत तथा गौणत: अन्य भारतीय भाषाएं है। किन्तु कुल मिलाकर हिंदी की नई पारिभाषिकी पर संस्कृत की तत्सम पदावलियों का प्रभाव दृढ़तर है। 'हिंदी-हिन्दुस्तानी' की तमाम हिमायत के बावजूद हिंदी को उस चाल में ढालने का प्रयत्न सरकारी स्तर पर नहीं हुआ। लिहाजा अपनी उर्वरता की जबर्दस्त क्षमता के बावजूद तत्सम-न्यस्त हिंदी की पारिभाषिकी सुनने-समझने, लिखने तथा बोलने में कठिन अवश्य है, इसमें दो राय नहीं। दूसरी तरफ खुली अर्थव्यवस्था और मीडिया की

संक्रामक छवि ने भी हिंदी को बेतरह अपने प्रभाव में लिया है, जिसके चलते अखबारों में वित्तीय क्षेत्र की खबरें अंग्रेजी के बहुतेरे शब्दों से भरी होती हैं। हम देखें तो यह व्याधि पहले कुछ नामावलियों तक ही सीमित थी।

आज एक अलग किस्म की अंग्रेजी मिश्रित हिंदी इलेक्ट्रानिक मीडिया की जबान पर हावी है कि भाषा शुचिता के समर्थकों को इससे उकताहट होने लगी है। यह सच है कि हिंदी में अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में "अनुकूलन" और "समावेशन" की क्षमता अधिक है, फिर भी अनावश्यक रूप में हिंदी में तीव्रता से घुलते-मिलते अंग्रेजी के शब्द-संस्कार ने हिंदी की अपनी पहचान का संकट भी खड़ा कर दिया है। यद्यपि एक वर्ग इसे हिंदी का सरलीकरण मानता है किन्तु क्या इस तरह के सरलीकरण के प्रयोग अंग्रेजी में किये जा सकते हैं? शायद नहीं। हिंदी के गद्य रूपों अथवा बोलचाल में अंग्रेजी का इस हद तक समावेशन बिल्कुल गैर जरूरी है कि वह "हिंग्रेजी" लगने लगे। हिंदी की पहली विशेषता यह है कि इसे जिस तरह बोला जाता है, उसी तरह लिखा जाता है। हाल के वर्षों में हिंदी के प्रयोग और प्रचलन का दायरा हिंदी फिल्मों तथा पर्यटन-विकास के चलते और भी बढ़ा है। हिंदी की वाक्य रचना में सर्वनाम, कारक और उचित अभ्यास के बाद दोषपूर्ण प्रयोग की संभावनाएं नगण्य ही होती है। डॉ. नगेन्द्र कहा करते थे भाषा की सरलता एक सापेक्षिक गुण है जो प्रसंग, वक्ता, बोधव्य आदि पर आश्रित है। मंतव्य यह कि जैसा प्रसंग वैसी भाषा। चिंतन यदि सूक्ष्म और जटिल होगा तो भाषा का स्वरूप भी जटिल होगा। हर व्यक्ति की भाषा, वक्तृत्व तथा विषय पर अपनी पकड़ होती है। उसके लेखन-संभाषण में भाषा का संप्रेषित रूप उसके भाषिक व्यक्तित्व का ही अंश होता है।

उपभोक्तावाद के विकास और अपने-अपने उत्पादों का बाजार प्रशस्त करने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी हिंदी के लुभावने विज्ञापनों के साथ भी मीडिया के दृश्य पटल पर छा चुकी है। एक नयी हिंदी बन रही है। एक नया भाषा-समाज विकसित हो रहा है। किन्तु कम्प्यूटरीकरण के क्षेत्र में हिंदी का प्रवेश अभी भी घुसपैठिये-सा ही है, जिससे हिंदी के रास्ते में रुकावट पैदा हुई है। भू-बाजारीकरण की शक्तियां भी हिंदी की पक्षधर नहीं है। यही समय है जब कि हिंदी को अधिक वरीयता तथा समर्थन मिलना चाहिए और यह काम केवल हिंदी अधिकारियों एवं हिंदी के प्राध्यापकों का नहीं है बल्कि भारत के नागरिकों, हिंदी-हिंदीतरभाषी समस्त जनता का है, जिससे वास्तविक अर्थों में वह साहित्य, कला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी तेजी से बदलते सूचना समाज और खुले बाजार की अर्थव्यवस्था में अपना हस्तक्षेप कायम रख सकें। यह तभी संभव है जब हिंदी के कम प्रचलित और दुरूह-से लगते पारिभाषिकों को भी प्रयोग में लाकर ग्राह्य एवं सर्वसमावेशी बनाया जाए। इसके लिए हिंदी अधिकारियों और अध्यापकों से ज्यादा हिंदी के कार्यकर्ताओं की जरूरत है।

देश के चारों कोनों को जोड़ने वाली भाषा हिंदी के जरिए ही हम अपने देशवासियों की पीड़ा समझकर उनका निवारण करने में सक्षम हो पाएंगे। हम अपनी भावनाओं एवं संवेदनाओं का प्रभावी ढंग से संप्रेषित कर सकते हैं। आज दुनिया के किसी अज्ञात कोने में बैठकर भी हम अपनी जेब से मोबाइल निकालकर हिंदी में लिखी गयी कोई भी रचना साझा कर सकते हैं जिसे दुनिया के हर कोने में पढ़ा जा सकता है। सच तो यह है कि हर अनुभव की एक अलग जमीन होती है। उस अमूल्य एहसास को सहेज कर उसमें से मोती चुनने होंगे जैसे हर चेहरा एक नया किरदार बनकर नमूदार होता है; नई चेतना संग टकराते हैं हम हर रोज। जैसे एक ही टूल्स से अलग अलग मशीनों के कलपुर्जे ठीक नहीं हो सकते, वैसे ही एक ही चेहरे पर बदलते हावभावों को पकड़ने का काम करता है- हिंदी साहित्य, जो हमें व्यक्तित्व और जीवनदृष्टि समझने की नई नजर और नया विजन मुहैया कराता है। हिंदी भाषा और साहित्य हमारी मौलिकता को संरक्षित करता है और हर चेहरे पर लिखी अनूठी कहानी को पहचानने की नई आंख देता है। पारदर्शी कांच के मर्तबान में से अलग-अलग बिम्ब नजर आते हैं मगर एक खास कोण से देखने पर पता चलता है कि सबके अनुभव की जमीन अलग-अलग है।

भाषाओं में राजभाषा हिंदी ही हमारे संपूर्ण जीवन की अखंड अभिव्यक्ति है और साहित्य जीवन का अंग। जीवन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है जिसमें भाषा, साहित्य व ललित कलाएं भी शामिल हैं। इनमें साहित्य को सर्वोच्च स्थान मिला है। यूं तो साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है, परंतु हिंदी साहित्य का काम महज समाज का चेहरा दिखाना भर तो नहीं होता। एक समय था जब साहित्य का विषय केवल आनंद प्रदान करना था परंतु आज साहित्य की भूमिका आनंद की परिसीमा को लांघकर सामाजिक सरोकारों की भूमि पर आ गई है। टॉल्सटॉय के अनुसार कला भावों को व्यक्त करने का सबसे सशक्त एवं सफल माध्यम है और यदि उसकी भावुकता सबके लिए सुगम न हो तो उसे हम कला नहीं कह सकते। यही कारण है कि कला या साहित्य का सृजन मानव जीवन को सुंदर तथा सुखमय बनाने के लिए होना चाहिए। कवि गुरू रवींद्रनाथ ने कहा है-'साहित्य में मिलने का एक भाव देखा जाता है, वह केवल भाव-भाव नहीं, भाषा-भाषा का, ग्रंथ-ग्रंथ का ही मिलन नहीं, मनुष्य के साथ मनुष्य का, अतीत के साथ वर्तमान का, दूर के साथ निकट का, अत्यंत आंतरिक मिलन साहित्य के अतिरिक्त किसी से संभव नहीं। 'यह साहित्य ही है जिसके जरिए देश के चारों कोनों की संवेदना को एकसूत्र में जोड़ा जा सकता है।

सामाजिक अंधविश्वासों और सड़ी गली मान्यताओं के विरोध में समाज के सांस्कृतिक उन्नयन में युवा पीढ़ी में हिंदी भाषा, हिंदी साहित्य व कला के प्रति चेतना जगाने की जरूरत है ताकि हम आज के समय की आवाज साहित्य में मुखरित कर सकें। ऐसे अवसर पर जरूरी है कि सबका मनोबल बढ़ाने के लिए हिंदी में छोटी-छोटी ऑनलाइन बातचीत की जाए। राजभाषा हिंदी में उनसे फोन पर हर समय लंबी बातचीत करके उनके टूटे बिखरे मन को संबल दिया जाए। घरों में रहने वाले युवजन की समस्याओं को संवेदनशीलता से सुनकर यथेष्ट मार्गदर्शन देना आज की सबसे जरूरी पहल है। यह सब तभी संभव था, जब हम उनकी आत्मा से जुड़ सकें और आत्मा से जुड़ने के लिए भाषा हिंदी एक अनिवार्य सेतु बनती गयी तभी हम करोड़ों भारतवासियों की अंतर्मन की आवाज सुन सके।

बात चाहे धर्म की हो या राजनीति की, समाज की हो या बाजार की, कलाओं के विविध संसार की हो या सृजनात्मक दुनिया की, हमें हर पल चौकन्ना रहकर जीवन के प्रति उन्मुख होना पड़ता है। जीवन के राग रंग और उत्सवधर्मिता को बनाए रखने के लिए हमें नए सिरे से जद्दोजहद करनी पड़ती है ताकि जिंदगी के सुर न बिखरने पाएं। सचमुच, आज हम आश्वस्त हैं कि यही है हमारी सफलता का जादू जब हमने करोड़ों देशवासियों को राजभाषा हिंदी में प्रेरक कविता लिखकर प्रोत्सोहित करने का ठान लिया, तो ये है राजभाषा की ताकत। आज जरूरत इस बात की है कि हम अपनी राजभाषा को बढ़ावा देकर उसकी ताकत व महत्ता को समझें ताकि विपत्ति काल में हमारा डांवाडोल चित्त स्थिर रहकर आपदा का डटकर मुकाबला कर सके। ■

आजादी का अमृत महोत्सव

हम जिस दुनिया को जानते रहे हैं वह बदल रही है और एक नई दुनिया सामने आ रही है। हमारे दृढ़ विश्वास की ताकत हमारे विचारों की जीवन यात्रा का निश्चय करेगी। आज़ादी का अमृत महोत्सव प्रगतिशील भारत के 75 वर्ष पूरे होने और यहां के लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को याद करने और जश्न मनाने के लिए भारत सरकार की ओर से की जाने वाली एक पहल है।

विशेष लेख

आज़ादी का अमृत महोत्सव: बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष

पूनम कुमारी प्रसाद
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, वाराणसी

राज या प्रशासन की भाषा को राजभाषा कहते हैं। इसके माध्यम से सभी प्रशासनिक कार्य संपन्न किए जाते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार **"उस भाषा को राजभाषा कहते है जो सरकारी कामकाज के लिए स्वीकार की गई है और जो शासन तथा जनता के बीच आपसी संपर्क स्थापित करती है।"** जब से प्रशासन की परंपरा प्रचलित हुई है तभी से राजभाषा का प्रयोग किया जा रहा है। प्राचीन काल से भारत से संस्कृत, प्राकृत, पालि, अपभ्रंश आदि भाषा का राजभाषा के रूप में प्रयोग होता था।

सन् 1855 में लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी भाषा को शिक्षा एवं प्रशासन की भाषा के रूप में स्थापित कर दिया। धीरे - धीरे वह न केवल पूर्णतया भारतीय प्रशासन की भाषा बन गई बल्कि शिक्षा, वाणिज्य एवं कारोबार की भाषा के रूप में भी प्रतिष्ठित हो गई। इतना ही नहीं वह भारत के शिक्षित वर्ग के व्यवहार की भाषा भी बन गई। फिर भी अंग्रेजी शासक यह महसूस करते रहे कि भारतीय भाषाओं को बहुत दिनों तक दबाया नहीं जा सकता। अतः उन्होंने हिंदी भाषी प्रदेशों में हिंदी को और अन्य प्रदेशों में वहाँ की भाषाओं को प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम बनाया। इसका परिणाम यह हुआ कि हिंदी एवं भारतीय भाषाएं विकसित होने लगीं और वे शिक्षा का माध्यम बनीं। इतना ही स्वतंत्रता संग्राम के दौर में हमारे राजनेताओं एवं क्रांतिकारियों ने भारतीय भाषाओं विशेषकर हिंदी को राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा के रूप में प्रचारित करना आरंभ कर दिया था। इस राष्ट्रीय जागरण के परिणामस्वरूप हिंदी का उत्तरोत्तर प्रसार होने लगा और यह धारणा सशक्त होती गई कि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हिंदी ही देश की राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा बनेगी। देश के अनेक राजनेताओं ने इस पर अपनी सहमति भी व्यक्त की थी।

महात्मा गाँधी ने किसी भी भाषा को राष्ट्रभाषा बनने के लिए आवश्यक पाँच गुणों को आनिवार्य माना था–

सरकारी कर्मचारी उसे आसानी से सीख सकें।
वह समस्त भारत में धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संपर्क के माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम हो।
वह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती हो।
सम्पूर्ण देश को उसे सीखने में आसानी हो।
ऐसी भाषा को चुनते समय क्षणिक हितों को ध्यान न दिया जाए।

उनका मानना था कि भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसमें उपर्युक्त सभी गुण मौजूद है। महात्मा गाँधी एवं अन्य नेताओं के उद्‌गारो का परिणाम यह हुआ था कि जब भारतीय संविधान सभा में संघ की राजभाषा निश्चित करने का प्रश्न आया तो विशद विचार मंथन के बाद 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को भारत संघ की राजभाषा घोषित किया गया। 26 जनवरी, 1950 को भारतीय संविधान लागू होने के साथ ही देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा प्राप्त हो गया।

यूको बैंक में राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन को सुचारू रूप से लागू करने एवं जनता को उनकी भाषा में सेवा प्रदान करने के उद्देश्य से वर्ष 1972 में प्रधान कार्यालय में राजभाषा विभाग का गठन किया गया। यूको बैंक का शीर्ष प्रबंधन राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति प्रारंभ से ही गंभीर एवं प्रतिबद्ध रहा है। विभाग के गठन के पश्चात ही बैंक में राजभाषा अधिकारियों की नियुक्ति की गई एवं विभिन्न अंचलों में उनकी पदस्थापना की गई। विभिन्न अंचलों में पदस्थापित राजभाषा अधिकारियों ने शाखा स्तर पर राजभाषा का कार्यान्वयन सुनिश्चित किया ताकि समाज के अंतिम व्यक्ति तक बैंकिंग सेवा उनकी भाषा (हिंदी/क्षेत्रीय) में उपलब्ध कराई जा सकें।

बैंक ने आंतरिक कामकाज में राजभाषा का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने हेतु नियम 5 के तहत हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में, धारा 3(3) के तहत सभी मैनुअल, संहिता, प्रक्रिया साहित्य, फार्म, फार्मेट, संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचना प्रशासनिक व अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियाँ, संविदा, करार, लाइसेंस, परमिट, निविदा प्रारूप आदि द्विभाषी, नियम 11 के तहत सभी साइन बोर्ड, काउंटर बोर्ड, ग्राहक सूचना एवं नामपट्ट आदि द्विभाषी अथवा आवश्यकतानुसार त्रिभाषी रूप में जारी करना सुनिश्चित कर रहा है।

हिंदीतरभाषी स्टाफ सदस्यों को राजभाषा हिंदी में कार्य करने में सक्षम बनाने हेतु बैंक हिंदी शिक्षण योजना द्वारा चलाई जा रही प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत पाठ्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित कराना सुनिश्चित कर रहा है। परिणामस्वरूप यूको बैंक के अधिकतम कर्मचारी हिंदी में प्रवीणता प्राप्त हैं। राजभाषा नियम 10(4) के तहत बैंक के कार्यालय/शाखाएं भारत के राजपत्र में अधिसूचित हैं एवं नियम 8(4) के तहत प्रवीणताप्राप्त स्टाफ को व्यक्तिशः आदेश जारी किए जा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त तिमाही में आयोजित हिंदी कार्यशालाओं के माध्यम से स्टाफ को यूनिकोड टंकण प्रशिक्षण, हिंदी पत्राचार, टिप्पण लेखन प्रशिक्षण एवं राजभाषा नीति एवं नियमों के प्रति स्टाफ को सचेत रखने का प्रयास जारी है।

वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्यवन को और प्रभावी बनाने एवं विभागों के कार्यों की समीक्षा हेतु प्रति तिमाही राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया जा रहा है। राजभाषा अधिकारियों द्वारा शाखाओं का राजभाषायी निरीक्षण किया जा रहा है।

बैंक राजभाषा अधिकारियों को प्रशिक्षित करने हेतु वार्षिक आधार पर प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं अंचलों के कार्यों की समीक्षा करने हेतु अखिल भारतीय राजभाषा अधिकारी सम्मेलन अनिवार्य रूप से आयोजित करता है। बैंक भारत सरकार द्वारा समय-समय पर राजभाषा कार्यान्वयन हेतु लागू तकनीक आधारित नवोन्मेषी सुधारों को ग्रहण कर तत्काल उनका कार्यान्वयन सुनिश्चित कर रहा है।

वर्तमान बैंकिंग सेवा पूर्णतः तकनीक पर आधारित है। यूको बैंक तकनीक के माध्यम से राजभाषा का कार्यान्वयन सुनिश्चित कराने में अग्रणी रहा है। कम्प्यूटरों पर हिंदी टंकण हेतु यूनिकोड सक्रियण एवं पासबुक द्विभाषी प्रिंटिंग हेतु द्विभाषी लिंग्विफाई सॉफ्टवेयर का प्रयोग बैंक कर रहा है।

बैंक की वेबसाइट www.ucobank.com पूर्णतः द्विभाषी है। सभी जानकारियाँ द्विभाषी रूप में उपलब्ध है। बैंक के तकनीकी उत्पाद जैसे एटीएम, मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, वाट्सएप्प एवं पीओएस सभी द्विभाषी हैं। शाखा स्तर पर

पासबुक प्रिंटिंग हेतु स्थापित कियोस्क मशीन बहुभाषी सुविधा प्रदान करता है। बैंक की आंतरिक साइट यूको ऑनलाइन पर भी द्विभाषी सूचना उपलब्ध कराई गई है। बैंक में केंद्रीय प्रणाली (सिंगल साइन ऑन) के माध्यम से तिमाही प्रगति रिपोर्ट का प्रेषण शाखाओं/अंचलों द्वारा प्रधान कार्यालय को किया जाता है। स्टाफ सदस्यों को राजभाषा के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों के प्रति अद्यतन रखने हेतु ऑनलाइन माध्यम से प्रतिवर्ष राजभाषा पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करना अनिवार्य है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के क्षेत्र में भी यूको बैंक विगत 50 वर्षों में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन रहा है। बैंक के कार्यालय/शाखाएं अखिल भारतीय स्तर पर नराकास के सदस्य हैं। 42 अंचल एवं नराकास की सदस्य शाखाएं नराकास स्तर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन कर रही हैं एवं नराकास द्वारा सम्मानित भी हो रही है। यूको बैंक 8 महत्वपूर्ण नराकासों का संयोजक भी है, बैंक के लिए यह सम्मान एवं गर्व का विषय है।

विगत 50 वर्षों से बैंक हिंदी दिवस, विश्व हिंदी दिवस एवं राजभाषा से जुड़े कार्यक्रमों का सार्थक एवं प्रयोजनमूलक आयोजन कर रहा है। कार्यक्रमों का उद्देश्य राजभाषा के विविध आयामों से स्टाफ को परिचित कराना एवं राजभाषा कार्यान्वयन हेतु उनमें रूचि जागृत करना है। "यूको राजभाषा प्रतिज्ञा" एवं "यूको राजभाषा मिशन" राजभाषा के प्रति बैंक कार्यान्वयन की निष्ठा का परिचायक है। राजभाषा हेतु बैंक राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी 12 "प्र" का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित करता है।

आज हिंदी लोगों में अपनत्व और प्रेम का प्रखर माध्यम बन कर उभरी है और देश-विदेश मे माँ भारती को गौरवान्वित कर रही है। लोगों ने आज हिंदी के स्वर्णिम रूप को पहचाना।

राजभाषा योजना के अंतर्गत बैंक के सभी अंचल निम्नलिखित अनुकरणीय कार्यों को वार्षिक आधार पर संपन्न कर रहे हैं :-

यूको बैंक जी.डी. बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला
यूको राजभाषा सम्मान
यूको मातृभाषा सम्मान
यूको भाषा सेतु सम्मान
नगर के लोकप्रिय कार्यक्रम का प्रायोजन
दैनिकी, मासिकी एवं छमाही प्रत्रिका का प्रकाशन
भारतीय भाषा सौहार्द हिंदी पुस्तकालय हेतु पुस्तकों की खरीद

बैंक की स्वर्णिम यात्रा में एक नया एवं अविस्मरणीय अध्याय 14 सितंबर, 2021 को उस समय जुड़ गया जब श्री अतुल कुमार गोयल, पूर्व प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, यूको बैंक को विज्ञान भवन में श्री अमित शाह, माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा राजभाषा कीर्ति पुरस्कार-प्रथम से सम्मानित किया गया। यूको बैंक प्रधान कार्यालय को "ग" क्षेत्र में राजभाषा का श्रेष्ठ कार्यान्वयन सुनिश्चित करने हेतु वित्तीय वर्ष 2020-21 हेतु सर्वोच्च राजभाषा सम्मान राजभाषा कीर्ति पुरस्कार- प्रथम से सम्मानित किया गया। बैंक के स्वर्णिम इतिहास में एक ऐतिहासिक क्षण जुड़ गया।

राजभाषा की स्वर्णिम 50 वर्षों में प्रधान कार्यालय एवं विभिन्न अंचलों की अन्य उपलब्धियाँ निम्नवत है :-

गुवाहाटी अंचल को वित्तीय वर्ष 1994-95 हेतु क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार।

रांची अंचल को वित्तीय वर्ष 2011-12 हेतु क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार, प्रथम।

नराकास बैंक कोलकाता (यूको बैंक, प्रधान कार्यालय संयोजक) को वित्तीय वर्ष 2017-18 एवं 2018-19 हेतु क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार प्रथम एवं वित्तीय वर्ष 2019-20 हेतु द्वितीय पुरस्कार।

वाराणसी अंचल कार्यलय को नराकास (बैंक) वाराणसी द्वारा 2016-17,2017-18, 2018-19, 2019-20, 2020-21 हेतु प्रथम पुरस्कार।

राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा 2020-21 में आयोजित कंठस्थ प्रतियोगिता में जांचकर्ता एवं अनुवादक दोनों श्रेणियों में यूको बैंक को सर्वोच्च स्थान।

11-12 नवंबर, 2021 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्राल्य, भारत सरकार द्वारा वाराणसी स्थित ट्रेड सेंटर, बड़ा लालपुर में अखिल भारतीय प्रथम राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। यूको बैंक के पुस्तक स्टॉल का उद्घाटन माननीय श्री अमित शाह, **गृह एवं सहकारिता मंत्री भारत सरकार द्वारा** किया गया। अवसर पर माननीय श्री योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश भी उपस्थित थे। ■

विशेष लेख

आज़ादी का अमृत महोत्सव: बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष

अमित कुमार सरवर
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, इंदौर

देश के आजाद होने से पूर्व देश के उद्योगपति श्री घनश्याम दास बिड़ला जी द्वारा भारतीय लोगों के विकास को सुनिश्चित करने के लिए महात्मा गांधी जी के आह्वान पर बिड़ला जी ने 1943 में यूनाइटेड कमर्शियल बैंक की स्थापना की थी। तब से लेकर आज तक हमारा बैंक हिमालय की तरह आज भी खड़ा है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव, बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष की यात्रा में भारत सरकार, गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग का गठन हमारे बैंक के राष्ट्रीयकरण से पूर्व हो चुका था। भारत सरकार के द्वारा जारी संकल्पों, राष्ट्रपति के आदेशों को सभी सरकारी विभागों, मंत्रालयों, उपक्रमों, बैंक और बीमा संस्थानों, भारत सरकार से अनुदान प्राप्त विभाग और संस्थानों को अपने-अपने विभागों में राजभाषा विभाग की स्थापना करना अनिवार्य है चूंकि हमारा बैंक भी सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम (पीएसयू) बैंक है इसलिए हमारी राजभाषा के प्रति भी जवाबदेही और बढ़ जाती है। यूको बैंक में राजभाषा विभाग की स्थापना की जानकारी हमें प्रधान कार्यालय से प्राप्त पत्र एचओ/राजभाषा/397/(2/5)/2021-22 दिनांक 07.12.2021 से मिलती है जिसके अनुसार वित्तीय वर्ष 1971-72 में इसकी स्थापना हुई थी। इसकी प्रथम बैठक 07 फरवरी, 1974 को हुई थी। इस वर्ष यूको बैंक में 50 वर्ष पूर्ण होने पर इस सफर की यात्रा को **हम आज़ादी का अमृत महोत्सव, बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष के रूप** में मना रहे है। इस सफर को पूर्ण करने में हमारे बैंक के उच्च प्रबंधन का हमेशा सकारात्मक सहयोग, मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है। इसके अलावा हमारे गुणीजन राजभाषा अधिकारियों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। हमारे देश की जनता जन–जन की भाषा और संस्कृत भाषा की पुत्री राजभाषा **"हिंदी"** में अपनी बात रखती है। इस हिंदी को कैसे बैंक से जोड़ा जाए कि हमारे समस्त स्टाफ सदस्य बिना किसी शर्म और हिचकिचाहट के इस भाषा का प्रगोग कर सकें जिससे बैंक की हित के साथ-साथ ग्राहकों के हित का भी ध्यान रखा जा सके इसके लिए ग्राहक संबंधी फॉर्म, दस्तावेजों, पत्र-पपत्रों का द्विभाषीय अनुवाद किया गया। साथ ही बैंक की पॉलिसी के तहत कुछ मैनुअल का भी द्विभाषीकरण किया गया। साथ ही ऐसे स्टाफ सदस्यों को जिनकी शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी भाषा या अन्य भाषा थी, उन्हें कार्यसाधक ज्ञान प्रदान करने के लिए निरंतर हिंदी की प्रयोजनमूलक कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता रहा है इसके अतिरिक्त भारत सरकार की शिक्षण योजना के अंतर्गत उन्हें प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ परीक्षाओं के माध्यम से हिंदी

में कार्य करने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन दिया जाता रहा है। साथ ही इन परीक्षाओं में पास होने वाले स्टाफ सदस्यों को नकद राशि मानदेय के रूप में भी दिया जाता रहा है।

वर्ष 2020 में अंगीकार किया गया कार्य-योजना यूको बैंक के राजभाषा विभाग में एक मील का पत्थर साबित हुआ। इसे अंगीकार करते ही राजभाषा विभाग जो धीमी चाल से चल रहा था अब वह दौड़ने लायक विभाग बन गया। उसे एक ऐसी पहचान मिली जिसने सभी राजभाषा अधिकारियों में जोश भर दिया जिसे **संकल्प 2020 कार्य-योजना को पंख लगाने वाले हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल, हमारे कार्यपालक निदेशक श्री अजय व्यास, महाप्रबंधक महोदय श्री नरेश कुमार का अतुलनीय योगदान रहा।** इन्होंने इस **स्वर्णिम 50 वर्ष की यात्रा में एक अमिट छाप छोड़ी।**

वह शुभदिन जिसमें बैंक का नाम, विभाग का नाम और सभी राजभाषा अधिकारियों का नाम इतिहास के पन्नों में नाम दर्ज कराया, वह इस वर्ष अगस्त 2021 के अंत में आया। भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने वाले संस्थानों को मिलने वाले **कीर्ति पुरस्कार-प्रथम** यूको बैंक को प्राप्त हुआ। इससे बैंक के समस्त यूकोजन उस रत्न की प्राप्ति हुई, जिस रत्न की प्राप्ति के लिए हमने कई वर्षों से बड़ी वेसब्री से इंतजार किया था। इस पुरस्कार को दिनांक 14 सितंबर, 2021 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में माननीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के कर-कमलों से हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल जी द्वारा प्राप्त किया गया। इस **कीर्ति पुरस्कार पुरस्कार-प्रथम** को प्राप्त करने में हमारे सेवानिवृत्त और वर्तमान सभी राजभाषा अधिकारियों ने इस यज्ञ में अपने कर्मों और मेहनत से आहुति दी और आगे भी आहुति देने के लिए दृढ़ संकल्पित है।

क्षेत्रीय पुरस्कार : वर्ष 2010-11 में अंचल कार्यालय रांची को प्रथम क्षेत्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। उस वक्त के तत्कालीन राजभाषा अधिकारी और वर्तमान में अंचल कार्यालय, जयपुर में कार्यरत श्री सुधीर साहु जी (मुख्य प्रबंधक) **थे।** एक बार गुवाहाटी अंचल कार्यालय को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

नराकास स्तर पर उपलब्धि : - नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) के स्तर पर भी पिछले दो वर्षों में हमारी उपस्थिति और उपलब्धियों ने पुरस्कारों पर दवदबा रखने वाले बैंकों के साथ स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का माहौल तैयार किया है। अब तक हमारे 42 अंचलों में से 20 अंचलों ने अपने-अपने बैंक नराकास का प्रथम पुरस्कार इस वर्ष प्राप्त किया है, जो अभी तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा है और आगे भी इससे ज्यादा अंचल प्रथम पुरस्कार की दौड़ में है।

कंठस्थ स्तर पर उपलब्धि :- भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा सी-डेक पुणे की सहायता से स्मृति आधारित अनुवाद प्रक्रिया की कार्ययोजना तैयार की गई। सभी सरकारी विभागों, मंत्रालयों, उपक्रमों, बैंकों और बीमा संस्थानों, भारत सरकार से अनुदान प्राप्त विभाग और संस्थानों को इस प्रतियोगिता में शामिल किया गया था। इस प्रतियोगिता में यूको बैंक के द्वारा अभूतपूर्व योगदान दिया गया। प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित हिंदी के एक कार्यक्रम में राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव महोदया श्रीमती मीनाक्षी जौली जी ने हमारे कार्यपालक निदेशक महोदय से यूको बैंक द्वारा कंठस्थ प्रतियोगिता में श्रेष्ठ प्रदर्शन किए जाने की अपील की थी। हमारे कार्यपालक निदेशक महोदय श्री अजय व्यास जी द्वारा संयुक्त सचिव महोदया को यह आश्वासन दिया गया था कि इस कंठस्थ प्रतियोगिता में हमारा बैंक भाग भी लेगा और साथ ही उच्च प्रदर्शन भी करेगा। इस कमिटमेंट को पूरा करने के लिए प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग द्वारा एक योजना का निर्माण किया गया, जिसके परिणामस्वरूप जांचकर्ता के रूप में सर्व श्री प्रथम स्थान श्री आलोक श्रीवास्तव जी मुख्य प्रबंधक स्टाफ ट्रेनिंग कॉलेज कोलकाता, श्री सुधीर साहू जी,

मुख्य प्रबन्धक, अंचल कार्यालय जयपुर, वहीं अनुवादक के रूप में प्रथम स्थान अखिल भारतीय स्तर पर श्री सूरज कुमार, अंचल कार्यालय भागलपुर, तृतीय स्थान श्रीमती हेमलता तांतिया, अंचल कार्यालय चंडीगढ़, चतुर्थ स्थान श्री विशाल कुमार, अंचल कार्यालय गुवाहाटी, सुश्री पूनम कुमारी, अंचल कार्यालय वाराणसी को मिला।

इसी प्रकार कंठस्थ के तीसरे चरण में यूको बैंक के राजभाषा अधिकारी श्रीमती बेलोना मेथ्यु ने अनुवादक श्रेणी में अखिल भारतीय स्तर पर सभी सरकारी विभागों, मंत्रालयों, उपक्रमों, बैंक और बीमा संस्थानों, भारत सरकार से अनुदान प्राप्त विभागों और संस्थानों के मध्य में दूसरा स्थान प्राप्त किया, वर्धमान अंचल के राजभाषा अधिकारी श्री अमरदीप कुमार जी एवं अंचल कार्यालय इंदौर के राजभाषा अधिकारी श्री अमित कुमार सरवर ने 09 वां स्थान, अंचल कार्यालय देहारादून की राजभाषा अधिकारी सुश्री अर्चना कुमारी ने 24 वां स्थान, वहीं अंचल कार्यालय अहमदाबाद की राजभाषा अधिकारी सुश्री राजेश्वरी सोलंकी जी ने 29 वां स्थान प्राप्त किया। वही जांचकर्ता श्रेणी में श्री प्रदीप चतुर्वेदी जी ने चौथा स्थान और श्री अमरदीप कुलश्रेष्ठ जी ने पाँचवाँ स्थान प्राप्त किया।

कंठस्थ के प्रथम चरण में ही अंचल कार्यालय रायपुर के मुख्य प्रबन्धक राजभाषा श्री सुभाषचंद्र शाह जी ने इस यूको बैंक के कंठस्थ में भागीदारी करने की आधारशिला रखी थी साथ ही सम्मानजनक स्थान हासिल कर राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर यूको बैंक के नाम का परचम लहराया था।

हिंदी पत्राचार प्रोत्साहन योजना

पुरस्कार के पैमाने इस प्रकार हैं:-

भाषायी क्षेत्र	पत्र –संख्या लक्ष्य हिंदी भाषी वर्ग	पत्र –संख्या लक्ष्य हिंदीतर भाषी वर्ग	प्रोत्साहन राशि
"क"	500	400	रु.5000/-
"ख"	400	300	रु.5000/
"ग"	250	150	रु.5000/

संकल्प राजभाषा 2020 कार्य-योजना

बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी ने दिनांक 16.09.2019 को आयोजित भारतीय भाषा सौहार्द स्वरूप हिंदी दिवस कार्यक्रम में राजभाषा विभाग के समक्ष आगामी वर्ष राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीतने का एक बड़ा लक्ष्य रखा। इसके साथ ही उन्होंने अंचल कार्यालयों के समक्ष भी क्षेत्रीय पुरस्कार जीतने का लक्ष्य रखा। नराकास के द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार नहीं **बल्कि प्रथम पुरस्कार जीतने पर बल दिया गया।**

प्रधान कार्यालय द्वारा कहा गया कि अब हमारे अंचलों को नराकास पुरस्कारों पर ही संतोष नहीं करना चाहिए बल्कि **उससे ऊपर उठकर भारत सरकार के क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कारों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।**

इस योजना को अंगीकार करने के बाद राजभाषा के कार्यों में एक महत्वपूर्ण कड़ी जुड़ गई साथ ही और सर्वश्रेष्ठ कार्य करने के लिए हमें निरंतर उच्च प्रबंधन की ओर से प्रेरणा और प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है। इसे हमारे राजभाषा विभाग का एक प्रकार का वार्षिक कार्यक्रम समझ सकते हैं, जिसे सभी राजभाषा अधिकारियों को अपने-अपने अंचलों में अंचल प्रबन्धक की सहायता से इसे मूर्त रूप देना होता है और यह कार्यक्रम विगत 02 वर्षों से लगातार जारी है। फिर भी संक्षिप्त रूप में इसकी जानकारी आपसे साझा करना चाहेंगे—

1. वार्षिक कार्यक्रम / तिमाही बैठकों के अनुसार सभी लक्ष्यों को पूर्ण करना।
2. कार्यालय का बड़ा कार्य हिंदी में करना जिसमें गृह **ऋण प्रस्ताव, ज़ेडएलसीसी के प्रस्ताव, ज़ेड ओपीसी आदि के ऋण प्रस्तावों को द्विभाषी करना।**
3. कम से कम 40 पृष्ठ की **पत्रिका का प्रकाशन** किया जाता है, जिसमें 80 प्रतिशत जानकारी हिंदी भाषा में और 20 प्रतिशत सामग्री क्षेत्रीय भाषा में होती है।

4. बैंक के संस्थापक जी.डी.बिड़ला की स्मृति में हर वर्ष **जी.डी.बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला** का आयोजन किया जाता है, जिसमें अर्थशास्त्री, बैंकिंग के जानकार, भूगोलवेत्ता, पर्यावरणविद आदि द्वारा किसी विषय पर व्याख्यान होता है ।

5. सेमिनार / संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है ।

6. अनुच्छेद 351 के तहत नगर के **लोकप्रिय कार्यक्रम का प्रायोजन या उसमें सहयोग** किया जा रहा है । इसके अंतर्गत स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालय या साहित्यिक मंच या संस्थानों को नकद राशि देकर उनके आयोजनों को सफल बनाया जाता है ।

7. **यूको बैंक राजभाषा सम्मान :** (हिंदी के मेधावी छात्र का सम्मान) इस योजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय स्तर पर हिंदी में एम. ए. (हिंदी साहित्य) करने वाले शीर्ष 2 छात्रों को सम्मानित किया जा रहा है । जिसमें प्रति विद्यार्थी को 5000/- रु की नकद राशि और स्मृति चिह्न प्रदान किया जा रहा है ।

8. **यूको बैंक मातृभाषा सम्मान :** इस योजना के अंतर्गत राज्य की सिविल सेवा की परीक्षा को मातृभाषा माध्यम से उत्तीर्ण करने वाले शीर्ष 02 छात्रों को सम्मानित किया जा रहा है, जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी को 5000/- रु की नकद राशि और स्मृति चिह्न प्रदान किया जा रहा है ।

9. **यूको बैंक भाषा सेतु सम्मान :** इसमें किसी साहित्यकार या भाषाविद के नाम पर इस पुरस्कार का नाम रखा जाता है और किसी भी साहित्यकार, कवि, लेखक या भाषाविद को प्रतिवर्ष सम्मानित किया जा रहा है ।

10. प्रतिदिन **यूको दैनिकी** और प्रतिमाह **मासिकी** का प्रकाशन किया जा रहा है ।

इस संकल्प राजभाषा 2020 कार्ययोजना ने निश्चित ही हमें इस वर्ष का राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीतने में हमें बड़ी सहायता की है । बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष की यात्रा बड़ी सुखद रही है । इसमें कई बार उतार–चढ़ाव भी आए हैं किन्तु राजभाषा विभाग नई योजनाओं एवं संकल्पों के साथ सतत प्रयासरत है ।

इस यात्रा में हम उन साथियों को भी याद करना चाहते हैं जिनके अथक प्रयासों से इस विभाग को पहचान मिली जिनके नाम हैं – श्री सुभाषचंद्र पालीवाल, जो कि यूको बैंक राजभाषा विभाग के प्रथम राजभाषा अधिकारी थे, श्री हरेराम वाजपायी जी, साहित्यमंत्री मध्यभारत साहित्य, मल्ल जी, श्रीमती उषा भरत जी, आदि राजभाषा अधिकारी हैं । इस यात्रा में हमारा बैंक अपनी बैंक की वेबसाइट को पूर्णत: द्विभाषी किया, जिसकी साइट हिंदी भाषा में ओपेन होती है जो उल्लेखनीय कार्यों में से एक है । सारी जानकारी और सामग्री हिंदी में उपलब्ध होना बैंक के राजभाषा विभाग की महत्वपूर्ण उपलब्धि है । इन सारी उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि आने वाला समय यूको बैंक के लिए स्वर्णिम सिद्ध होने वाला है और पुरस्कारों की दौड़ में चाहे वह नराकास हो या क्षेत्रीय पुरस्कार या कीर्ति पुरस्कार अब समय हमारा है और दबदबा भी हमारा होने वाला है, जिसे प्राप्त करने के लिए सभी राजभाषा अधिकारी **दृढ़ संकल्पित** है ।

अंत में यही कहना चाहूँगा कि –

आसान नहीं था इस मंजिल को पाना
बस करते चले गए और कारवां अपने आप बनता चला गया । ■

विशेष लेख

आज़ादी का अमृत महोत्सव: बैंक में राजभाषा के स्वर्णिम 50 वर्ष

अंशुल त्रिपाठी
अधिकारी
गंज मुरादाबाद शाखा
कानपुर अंचल

किसी राष्ट्र का भविष्य तब उज्ज्वल होता है जब वह अपने अतीत के अनुभवों और विरासत के गर्व से पल पल जुड़ा रहता है। भारत के पास गर्व करने के लिए समृद्ध ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत का अथाह भंडार है। अपनी इसी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना के साक्षी बनने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने गुजरात के अहमदाबाद स्थित साबरमती आश्रम से पद-यात्रा को हरी झंडी दिखा कर आज़ादी की 75वीं वर्षगांठ को समर्पित "आज़ादी का अमृत महोत्सव" कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

इतिहास के इस गौरव को सहेजने के लिए पूरा देश समर्पित है। दांडी यात्रा से जुड़े स्थल का पुनरुद्धार देश ने दो साल पहले ही पूरा किया। अंडमान मे जहाँ नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने पहली बार तिरंगा फहराया था, देश ने उस विस्मृत इतिहास को भी भव्य आकार दिया है। बाबा साहब से जुड़े जो स्थल दशकों से भूले बिसरे पड़े थे प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से उनका भी विकास पंचतीर्थ के रूप मे किया गया।

भारत को स्वतंत्र कराने में देश के कोने-कोने से न जाने कितने ही दलित, आदिवासी, महिलाएं और युवा थे जिन्होंने असंख्य त्याग किया, आज़ादी का ये अमृत महोत्सव इसी ज्योति को जलाने का कार्य कर रहा है कि हम इस माध्यम से अपने भविष्य एवं वर्तमान को अपने उस उज्ज्वल भूतकाल से रू-ब-रू करवा सकें जिसने स्वाधीनता की पीठिका तैयार की थी। देश-व्यापी यह महोत्सव हमें हमारे उस युग पुरुष से मिलने का मौका देता है जिसने नमक कानून तोड़ कर देश को पहली बार आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाया था, जिसके बारे में मशहूर वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने यहाँ तक कहा था कि **"हो सकता है कि आने वाली पीढ़ियाँ इस पर कभी यकीन ही न कर पाये कि हाड़-माँस का ऐसा भी आदमी धरती पर आया था।"**

आज़ादी का अमृत महोत्सव आज़ाद भारत के सपनों और कर्तव्यों को सामने रख कर देश को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। यह वह समय था जब देश के पास भावना तो थी पर भाषायी एकता से हम कोसों दूर थे। महात्मा गांधी के अथक प्रयासों से हिंदी को ऐसा स्वर्णिम रूप मिला कि इसने देश को एकसूत्रीय माला मे पिरोने का कार्य किया। आज़ादी के पूर्व खड़ी बोली या अवधी ही एकमात्र संचार की भाषा थी जो देश के केवल कुछ हिस्सें तक ही सीमित थी। स्वतंत्रता संग्राम के समय हिंदी एक प्रखर भाषायी माध्यम बनकर प्रमुखता से समझी एवं बोली जाने लगी। अंग्रेज़ी शासन को जड़ों से उखाड़ने के लिए यह आवश्यक हो गया था कि क्रांतिकारियों

के बीच कोई ऐसी एक भाषा हो जिससे वे अपनी बात सरलता से एक दूसरे को समझा सकें। यह वह दौर था जब देश अंग्रेज़ी शासान से त्रस्त था और लोग आज़ादी के लिए तरस रहे थे। अतः स्वतंत्रता संग्राम के वक्त हिंदी ऐसी ही एक लोकप्रिय भाषायी माध्यम बन कर उभरी जिसने लोगों मे देश प्रेम की भावना का संचार किया। कई गीत संगीत और नारे हिंदी मे लगाए जाने लगे। यही वह समय था जब कई लेखक लेखिकाओं ने हिंदी को अपनी कलम से अलंकृत किया।

1947 से लेकर अब तक का समय हिंदी का वर्तमान काल कहलता है। देश की आज़ादी के साथ साथ हमें भाषागत स्वतंत्रता भी प्राप्त हुई। इस काल मे हिंदी का आधुनिकीकरण एवं मानकीकरण हुआ और देश की वैधानिक व्यवस्था मे हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकारने का सर्वोच्च कार्य सम्पन्न हुआ। संविधान की धारा 343 के अंतर्गत हिंदी भारत की राजभाषा घोषित हुई और धारा 343 मे हिंदी के विकास की दिशा तय की गयी जिसमे शासन की ओर से हिंदी के विकास के लिए किए गए प्रयासों को भी तय किया गया। **"देश के विकास के साथ राजभाषा के प्रकाश"** पर ज़ोर दिया जाने लगा और हिंदी की गौरवमयी विकास यात्रा को पुराने खादी के झोलों से निकाल कर भविष्य की धरोहर बनाने के लिए ज़ोर दिया जाने लगा। माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने यूएन मे जब हिंदी मे विश्व को संबोधित किया तब से मानो हिंदी का रूप ही बदल गया। विश्व पटल पर हिंदी और भी शोभायमान हो गयी और भारत का गौरव बन कर उभरी।

आज हिंदी लोगों मे अपनत्व और प्रेम का प्रखर माध्यम बन कर उभरी है और देश-विदेश मे माँ भारती को गौरवान्वित कर रही है। लोगों ने आज हिंदी के स्वर्णिम रूप को पहचाना है और दिल से अपनाया है। हिंदी के कई कलमकारों जैसे श्री हरिवंश राय बच्चन और रामधारी सिंह दिनकर की रचनाओं ने इसे लोगों के दिलों तक पंहुचाने का कार्य किया है। तो आइये हम उन हिंदी के सिपाहियों की विरासत को आगे बढ़ाएँ और हिंदी के प्रचार प्रसार और प्रयोग पर ज़ोर दें कि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी इसके इतिहास पर गर्व कर सकें। ■

आजादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी के आंदोलन के इतिहास की तरह ही आज़ादी के बाद के 75 वर्षों की यात्रा, सामान्य भारतीयों के परिश्रम, इनोवेशन, उद्यम-शीलता का प्रतिबिंब है। हम भारतीय चाहे देश में रहे हों, या फिर विदेश में, हमने अपनी मेहनत से खुद को साबित किया है। हमें गर्व है हमारे संविधान पर। हमें गर्व है हमारी लोकतांत्रिक परंपराओं पर। लोकतंत्र की जननी भारत, आज भी लोकतंत्र को मजबूती देते हुए आगे बढ़ रहा है। ज्ञान-विज्ञान से समृद्ध भारत, आज मंगल से लेकर चंद्रमा तक अपनी छाप छोड़ रहा है।

नरेन्द्र मोदी
प्रधान मंत्री

सृजीता भट्टाचार्जी
प्रबंधक
विपणन एवं धन प्रबंधन विभाग

সুখ

কেউ কি পরিত্রাণ চায়?
তিল তিল করে ভেবেছি,
প্রত্যাখানের উত্তর, প্রতিবার ।
আজীবন কাল এক ভয়,
যা ছিলই তা সরিয়ে এসেছি ।
ধৈর্যহীনের মত জেদে, অধরার
দিকে তাকিয়ে বুঝিনি একই মন
একদিন কেড়ে নেবে দিনরাত ।
সেই যা ভোলেনি বলে একজন,
শব্দের জাদুমালা তুলে রাখে ।
তার চোখে দেখি শুধু ভিজে মাটি,
পোড়া আঁচলের রং ছেনে ছবি আঁকে ।

আক্ষেপ

শিশিরের কণা ধোঁয়া হয়ে যাবে,
এত উত্তাপ, তবু রা টি নেই,ঘাসফুল!
এর চেয়ে তার পুড়ে যাওয়া ভালো,
একমুঠো হাওয়া এসে নিয়ে যাবে ছাই ।
অবুঝের তকমা গায়ে লেগে তার,
কার নিড়ানির ধার উপড়োবে ঠাঁই;
তাই এরচে' পুড়ে যাওয়া ভালো,
থম দুপুরের হাওয়া, নিয়ে যাবে,ছাই ।

काव्यांजलि

सुधीर सजल की गजलें

जब ये आई तो

किरण जो फूटी तो सारा मेरा ज़हान भर गया
सुबह की लाली से जैसे ये आसमान भर गया

जब आई हाथ इसके भी तो यूं खाली ही थे मगर
उसी दिन आटे का ये खाली मर्तबान भर गया

पड़ी ये नन्हीं गजल इतनी बड़ी नज़्म पे भारी
ये आ गई तो घर में पसरा बियाबान भर गया

थी कितनी रंजिशें, शिकवे, गीले थे, बेईमानी थी
ये आ गई तो पूरे दिल में बस ईमान भर गया

एक इंसान की कितनी जरूरतें अगर देखो
अभी से घर में इसका इतना ये सामान भर गया

न होंगे हम तो भी कायम रहेंगे इसकी धड़कन में
मेरे नाचीज दिल में भी यही गुमान भर गया

निभा लिया हमने

अपना रिश्ता निभा लिया हमने
साल ये भी गँवा दिया हमने

दिल की सुनना गुनाह कर लेना
ये भी तुमको सिखा दिया हमने

ईद इस बार भी नहीं आई
फिर मुहर्रम मना लिया हमने

बेरहम धूप में न जल जाए
दिल को गम में डूबा लिया हमने

दिल में तूफान लिए फिरते हैं
जब उठा फिर दबा लिया हमने

पहली बारिश

सुधीर सजल

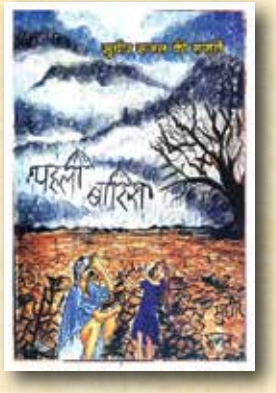

प्रथम संस्करण : 2022
मूल्य : ₹ 300
प्रकाशक : सजल प्रकाशन, भोपाल

चिंतन की सोंधी गंध से सराबोर 'पहली बारिश' की ग़ज़लें

"मौत से पहले नहीं मरना सुधीर / जिंदगी है जिंदगी की शाम तक" ये पंक्तियाँ सुधीर सजल के सद्यः प्रकाशित ग़ज़ल-संग्रह 'पहली बारिश' की हैं, जहाँ हमारा परिचय एक ऐसे सचेत और जाग्रत-विवेक वाले कवि से होता है, जिसकी वैचारिकता और विमर्शों के प्रति दृष्टिकोण में एक नयापन है। इन ग़ज़लों में कवि के आसपास की दुनिया तथा व्यक्ति के विभिन्न स्तरीय संबंधों को गहराई से परिभाषित करने की कोशिश है। इस काम में मददगार है उनकी लोकदृष्टि, संवेदना और सम्यक सोच, जिनके बल पर वे सृजन के दुर्गम मार्ग पर बढ़ते हुए नजर आते हैं। दरअसल कविता के मार्ग पर वही बखूबी चल सकता है जिसे लावे पर चलने की ललक हो। जलते-छटपटाते पाँवों से ही कवि अपने समय और देश-काल की व्याख्या ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के साथ करने में सफल हो पाता है।

सुधीर सजल ने इस ग़ज़ल-संग्रह में कवि-कर्म का एक नया प्रतिपाद्य रचने की चेष्टा की है। बदलती राजनीतिक-सामाजिक स्थितियाँ कवि को बेचैन करती हैं, जिन्हें वह ग़ज़लों में दर्ज करता है। इन ग़ज़लों में अभिव्यक्त संवेदना-समुच्चय की सघनता, अभिनिवेश की बहुस्तरीयता और सोच की मौलिकता उसके भीतर के कवि को एक ऊँचे मुकाम पर खड़ा करती हैं। उसकी संवेदना-भूमि के दायरे में ग्राम्य समाज की दारुण स्थितियाँ हैं तो तथाकथित सभ्य शहरी समाज के कुटिल नागरबोध पर तीक्ष्ण व्यंग्य भी। गाँवों का शोषण, सपनों की खोज में पलायन करते लोग और सपनों से ठगे गए निरीह व्यक्ति की मनःस्थिति का चित्रण मर्माहत करता है –

"दसमुँहा अजगर शहर ये सब निगलता जा रहा / गाँव, घर, नदियाँ, फसल, यादों की सब अमराइयाँ।" ... "लगाकर दोस्त का चेहरा हमारे घर में आते हैं / वो इतमीनान से फिर दुश्मनी हमसे निभाते हैं।"

आज मनुष्यमात्र के सामने विवशता है, वह चाहकर भी कुछ कर नहीं पा रहा है, पर उसके भीतर संघर्ष की एक आवाज है, जिसे व्यक्त किए बिना नहीं रहता ... "सुनेगा कौन फिर भी कहने की आदत है कहते हैं / हम अब भी उसी डूबे गाँव वाले घर में रहते हैं।" ... "जीने की चाह थी मगर मरना पड़ा हमें / हर एक साँस के लिए लड़ना पड़ा हमें।" ... "आगजनी, औरतखोरी कल दिन भर कत्लेआम हुआ / आज भी मंदिर की मूर्ति के चेहरे पर मुस्कान वही।"

सुधीर सजल की ग़ज़लें लोकधर्मी है, क्योंकि एक ओर जहाँ वे व्यक्तिगत अनुभवों को लोक से जोड़कर देखते हैं, वहीं अपने समाज, उसके संगठन, सामाजिक-पारिवारिक संबंधों और राजनीतिक उखाड़-पछाड़ को बेबाकी से प्रकट कर लोक पर पड़ने वाले प्रभावों को भी व्यक्त करते हैं। व्यक्ति, परिवार, पास-पड़ोस, निकटस्थ-दूरस्थ परिवेश सब इसी क्रम में मार्मिकता से अभिव्यक्त हैं –

"जिसके नकशे-कदम पे चलने की मिली नसीहतें / उसकी कमजोरियों को अपने मन में पालने लगे।"

इसी प्रकार वे आगे आज के समय का दर्द बयां करते हुए कहते हैं – "कातिल था उसको कत्ल करने का जुनून था / मैं उसको बस इक जुल्म का मारा समझता था। चढ़कर किसी के कांधे पे खड़ा था सितमगर / मैं उसको आसमां का सितारा समझता था।"

कवि में सच को सृजित करने का साहस है। आज मनुष्य जैसे जैसे सभ्य होता जा रहा है, वैसे-वैसे हिंसक, स्वार्थी और बर्बर भी होता जा रहा है। धर्म की जो बारूद लोगों की मानसिक चेतना में भरी जा रही है, वह मनुष्यता को बरबाद करने में लगी है। जाति, संप्रदाय, वर्ग आदि की कट्टरता हर एक को आशंका और आतंक से भर रही है। कवि कहता है –

"वो जब भी मुस्कराते हैं हमें तब याद आता है / जिसे कुर्बान करना हो उसी पर फूल चढ़ते हैं।" ... "यूँ उनका चेहरा आदमी जैसा ही लगता है / मगर डर जाओगे देखोगे जब वे मुस्कराते हैं।"

सुधीर सजल की ग़ज़लों में सामाजिक स्थितियों के लिए जो दर्द है वह व्यंग्य की शक्ल में प्रकट होता है –

"सुना है तुम्हारा हर दिन ही मंगलवार होता है / यहाँ तो रोज भूखे-बिलखते इतवार देखें हैं।" "हमारे खेत की फसलें चुराता कौन है बोलो / अनाजों से भरे सारे तेरे भंडार देखे हैं।"

इसी तरह शोषण, जमाखोरी और छीना-झपटी तथा आहत मन की ओर भी इशारा करते हैं –

"अनाजों से भरे गोदाम पर तेरे ही ताले हैं / इधर खाली करोड़ों पेट हैं रोटी के लाले हैं। अगर भीतर तुम्हारे है नहीं घनघोर अँधेरा / बता फिर कैद करके क्यों रखे इतने उजाले हैं।"

अंग्रेजियत पर व्यंग्य करते हुए कवि कहता है – "अपनी तहजीब को मिटना है तो मिट जाएगी / बच्चों की घुट्टी में अंग्रेजी को मिलाना है। ... हम तो पहले भी थे नौकर उन्हीं के आज भी हैं / अपने बच्चों को भी नौकर हमें बनाना है।"

इसी प्रकार हमारे कर्तृत्व को जब दूसरे हथिया लेते हैं तो व्यक्ति के भीतर की पीड़ा उभर आती है - "हमने बनाए रास्ते सब उनके हो गए / जब हम चले तो फिर नया गढ़ना पड़ा हमें।"

कवि के चिंतन और दृष्टिकोण में एक खुलापन है। कई बार कविताओं की पंक्तियाँ अक्षरमात्र नहीं रह जातीं, बोलने-बतियाने लगती हैं। उनके नए रंग उभरने लगते हैं, जिनमें धरती के रंगों की तरह विविधता है, स्वाभाविकता है, स्वच्छता है –

"कोई किताब जिंदगी से बड़ी नहीं हो सकती / सभी भाषाएँ, लिपियाँ, शब्द, अक्षर सब हमारे हैं।"

जहाँ तक भाषा का मामला है, कवि की भाषा में बेजान शब्द-चित्र नहीं हैं। जीते-जागते इनसान की सहज अभिव्यक्तियाँ उनकी भाषा में हैं। कवि ने लक्षणा एवं व्यंजना में तो अपनी बात कही ही है, कविता की शक्ल में अभिधात्मक पंक्तियाँ भी हैं, जो कवि की वाणी को विश्वसनीय बना देती हैं। यह भाषा प्रचलित और अनुकूलित सौंदर्यशास्त्र का प्रतिसंसार रचने का प्रस्ताव करती है एवं संवेदना के क्षेत्रों तक ले जाने का कार्यभार संभालती है। हम देखते हैं कि कवि की काव्यभाषा प्रसादन की नहीं, बल्कि दंश की भाषा है। तीर्यक और मुखर भाषा समाजशास्त्र के साथ भी आक्रामक ढंग से विमर्श करना चाहती है।

सुधीर सजल के जीवन में उम्मीदों के तार बहुत मजबूत हैं। तमाम प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद कवि पूरी तरह से हताश-निराश नहीं है, उसमें आशाओं-आकांक्षाओं की किरणें बची हैं -

"घुली फिजाँ में है बेवफाई / यकीं करे दिल तो किसपे बोलो / जो तंग आए हैं दुश्मनी से / वही निभाएँगे दोस्ती को।"

यह आशा उनकी इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास से और भी बलवती हो उठती है – "सुबह इस रात की आएगी एक दिन हम भी गाएँगे / ये दिल जब जुगनुओं के साथ जलना सीख जाएगा।" ... "मैं जब तक हूँ, नहीं मायूस होना जिंदगी से तुम / अँधेरा देख मुझको रोशनी बन कर बिखरता है।"

कवि की सकारात्मक सोच ही कविता को मानव जीवन के लिए पयस्विनी बना देती है। सुधीर सजल इसी राह पर हैं। उनकी पंक्तियाँ आश्वस्त करती हैं –

"क्यों सजाना ख्वाब अब हम छोड़ दें / रोशनी देता है सूरज शाम तक।"

समीक्षा
डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह
सेवानिवृत्त मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
कोलकाता-700107

हिन्दी प्रशिक्षण समन्वय समिति के तत्वावधान में सदस्य बैंकों तथा वित्तीय संस्थानों के संकाय सदस्यों के लिए आयोजित हिन्दी माध्यम राष्ट्रीय सेमीनार

हिंदी प्रशिक्षण समन्वय समिति, कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, भारतीय रिज़र्व बैंक, पुणे के तत्वावधान में यूको बैंक, सेंट्रल स्टाफ कालेज, कोलकाता ने सदस्य बैंकों तथा वित्तीय संस्थानों के संकाय सदस्यों के लिए बैंकिंग विषयों पर हिन्दी में सेमीनार के आयोजन के क्रम में दिनांक 19 दिसंबर, 2022 को निम्नलिखित विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया:

ग्राहक केंद्रिकता एवं कारोबार विकास
Customer Centricity and Business Development

इस आयोजन में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के प्रशिक्षण संस्थानों से आए 14 फ़ैकल्टी सदस्यों ने उक्त विषय पर हिन्दी में अपने शोध आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता यूको बैंक के महाप्रबंधक, मानव संसाधन, कार्मिक, प्रशिक्षण तथा राज़भाषा श्री मनीष कुमार ने की तथा सेमीनार का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री ए एस पिल्लई, महाप्रबंधक एवं उप प्राचार्य, कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, भारतीय रिज़र्व बैंक, पुणे ने किया। दिन भर चली इस संगोष्ठी में वक्ताओं ने बदलते हुए परिवेश में ग्राहक को केंद्र में रखकर किए जानेवाले कारोबार की चुनौतियों, अवसरों तथा संभावनाओं पर चर्चा की। इस अवसर पर सेमीनार के लिए प्राप्त आलेखों में से चयनित 22 आलेखों को पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया। इस पुस्तक का लोकार्पण मुख्य अतिथि श्री ए एस पिल्लई, महाप्रबंधक एवं उप प्राचार्य, कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, पुणे ने किया।

इस सेमीनार के आयोजन के लिए सक्षम प्राधिकारी ने एक आयोजन समिति का गठन किया। आयोजन समिति ने विषय का निर्धारण किया तथा कार्यक्रम की रूपरेखा तय की। यूको बैंक, सेन्ट्रल स्टाफ कालेज, कोलकाता के प्राचार्य के हस्ताक्षर से सदस्य बैंकों तथा संस्थानों को पत्र लिखकर सेमीनार के लिए आलेख मँगवाए गए। इसके प्रत्युत्तर में देशभर से 47 आलेख प्राप्त हुए। प्राप्त आलेखों की जांच वरिष्ठ बैंकरों से करवाई गई तथा श्रेष्ठ 14 आलेखों को सेमीनार में पावर प्वाइंट के माध्यम से प्रस्तुति देने के लिए आमंत्रित किया गया। सेमीनार में सभी 14 आलेख प्रस्तोताओं ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सेमीनार के चार सत्र थे। उद्घाटन सत्र

में मुख्य अतिथि श्री ए एस पिल्लई, महाप्रबंधक एवं उप प्राचार्य, कृषि बैंकिंग महाविद्यालय, भारतीय रिज़र्व बैंक, पुणे ने दीप जलाकर सेमीनार का उद्घाटन किया। इस सत्र की अध्यक्षता यूको बैंक के महाप्रबंधक, मानव संसाधन, कार्मिक, प्रशिक्षण तथा राजभाषा श्री मनीष कुमार ने की। यूको बैंक, सेंट्रल स्टाफ कालेज, कोलकाता के प्राचार्य इस सत्र में विशिष्ट अतिथि थे। इस अवसर पर हिंदी प्रशिक्षण समन्वय समिति के सदस्य सचिव श्री अरविंद सी रंगारी भी उपस्थित थे। सेमीनार में कुल 16 प्रस्तुतियाँ की गईं। सेमीनार में चयनित प्रस्तोताओं के अतिरिक्त श्रेठ पाए गए 10 आलेख लेखकों को भी आमंत्रित किया गया था।

सेमीनार के प्रथम तकनीकी सत्र में कुल 6 आलेखों की प्रस्तुति की गई। इस सत्र के अध्यक्ष बैंक आफ बड़ौदा अकादमी, कोलकाता के अधिगम प्रमुख श्री हेमंत कुमार साहू थे। विशिष्ट अतिथियों के रूप में श्रीमती सीमा सक्सेना, सहायक महाप्रबंधक एवं प्राचार्य, स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय, बैंक आफ इंडिया, कोलकाता तथा श्री पार्थ सेनगुप्ता, पूर्व महाप्रबंधक, यूको बैंक उपस्थित थे। इन दोनों ने दोनों तकनीकी सत्रों मे हुई प्रस्तुतियों का मूल्यांकन किया तथा श्रेष्ठ चार प्रस्तुतियों का चयन किया। इन श्रेष्ठ चार प्रस्तुतियों को समापन सत्र में पुरस्कृत किया गया।

सेमीनार के द्वितीय तकनीकी सत्र में कुल 8 आलेखों के साथ-साथ प्रोत्साहन स्वरूप दो अन्य आलेख भी स्वीकार किए गए। इस सत्र के अध्यक्ष सेंट्रल बैंक आफ इंडिया, अधिकारी प्रशिक्षण केंद्र, कोलकाता के उप प्राचार्य श्री गजेन्द्र सिंह थे।

सेमीनार के समापन सत्र में उपस्थित सभी संकाय सदस्यों को सम्मानित किया गया। चयनित सभी 14 प्रस्तोताओं को अंगवस्त्रम् के साथ प्रमाणपत्र तथा मानदेय राशि भेंट की गई। सेमीनार में भाग लेने आए अन्य संकाय सदस्यों को अंगवस्त्रम् के साथ स्मृति-चिह्न तथा प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। समापन सत्र में सत्र के अध्यक्ष तथा उपस्थित विशिष्ट अतिथियों यथा श्रीमती सीमा सक्सेना और श्री पार्थ सेनगुप्ता ने अपने विचार व्यक्त किए।

सेमीनार के संयोजक तथा सेंटल स्टाफ कालेज में मुख्य प्रबंधक, राजभाषा श्री अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ सेमीनार सम्पन्न हुआ। ■

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

चंडीगढ़

वाराणसी

हिन्दी दिवस - 2022

रायपुर

वाराणसी

साल्टलेक

गुवाहाटी

देहरादून

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार (दक्षिण)

बेंगलूरू

तिरुवनंतपुरम में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन-2023 आयोजित किया गया। कार्यक्रम में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले विभिन्न बैंक, बीमा, उपक्रम, केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को पुरस्कृत किया गया। इसी क्रम में वित्तीय वर्ष 2020-21के लिए यूको बैंक, अंचल कार्यालय, बेंगलूरू को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार (मध्य)

नागपुर

रायपुर

रायपुर में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मध्य एवं पश्चिम क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन-2023 आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा थे। सम्मेलन में राजभाषा विभाग की सचिव श्रीमती अंशुली आर्या व संयुक्त सचिव डॉ. मीनाक्षी जौली विशेष रूप से उपस्थित थीं।

कार्यक्रम में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले विभिन्न बैंक, बीमा, उपक्रम, केंद्र सरकार के कार्यालयों एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को पुरस्कृत किया गया। इसी क्रम में वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिए यूको बैंक, अंचल कार्यालय, रायपुर को प्रथम पुरस्कार तथा वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए अंचल कार्यालय रायपुर को प्रथम पुरस्कार एवं अंचल कार्यालय नागपुर को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार (उत्तर) - I & II

चंडीगढ़

भदोही शाखा (वाराणसी)

वाराणसी

देहरादून

जोधपुर

नई दिल्ली

अजमेर

दिनांक 03.11.2022 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अमृतसर स्थित गुरु नानक देव विश्वविद्यालय के दशमेश ऑडिटोरियम में उत्तरी क्षेत्र 1 एवं 2 हेतु संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन तथा वित्तीय वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 में श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संयुक्त सचिव, राजभाषा श्रीमती मीनाक्षी जौली ने की। वित्तीय वर्ष 2020 -21 के लिए उत्तरी क्षेत्र 1 के तहत यूको बैंक, अंचल कार्यालय जोधपुर को प्रथम, अंचल कार्यालय नई दिल्ली को तृतीय, 'ख' वर्ग के अंतर्गत अंचल कार्यालय चंडीगढ़ को द्वितीय एवं उत्तरी क्षेत्र 2 के तहत यूको बैंक अंचल कार्यालय वाराणसी को प्रथम और अंचल कार्यालय देहरादून को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए उत्तरी क्षेत्र 1 के तहत यूको बैंक, अंचल कार्यालय शिमला को प्रथम एवं अंचल कार्यालय अजमेर को तृतीय पुरस्कार से एवं उत्तरी क्षेत्र 2 के लिए यूको बैंक, अंचल कार्यालय, वाराणसी को प्रथम पुरस्कार, अंचल कार्यालय वाराणसी के अंतर्गत भदोही शाखा को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार (पूर्व एवं पूर्वोत्तर)

नराकास बैंक, कोलकाता

बेगूसराय

राँची

भागलपुर

गुवाहाटी

पटना

भुवनेश्वर में आयोजित पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में वित्तीय वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 हेतु नराकास (बैंक), कोलकाता को क्रमश : प्रथम एवं द्वितीय क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अलावा वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिए पूर्व क्षेत्र में अंचल कार्यालय, पटना को द्वितीय तथा अंचल कार्यालय, राँची को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुए। जबकि वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए पूर्व क्षेत्र में अंचल कार्यालय, बेगूसराय को प्रथम एवं अंचल कार्यालय, भागलपुर को तृतीय पुरस्कार तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र में अंचल कार्यालय, गुवाहाटी को तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए।

नराकास पुरस्कार

नराकास मुंबई द्वारा यूको बैंक अंचल कार्यालय मुंबई को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु उप निदेशक, राजभाषा, भारत सरकार के कर कमलों द्वारा वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नराकास भटिंडा द्वारा यूको बैंक, अंचल कार्यालय चंडीगढ़ के अधीन भटिंडा शाखा को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु वित्तीय वर्ष 2021-22 के लिए तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नराकास संबलपुर द्वारा यूको बैंक अंचल कार्यालय संबलपुर को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

दिनांक 22.12.2022 को नराकास वाराणसी द्वारा यूको बैंक अंचल कार्यालय वाराणसी को प्रथम पुरस्कार तथा वाराणसी की छमाही पत्रिका 'यूको काशी अमृत' पत्रिका संवर्ग में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नराकास देहरादून द्वारा यूको बैंक अंचल कार्यालय देहरादून को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु वित्तीय वर्ष 2018-19 एवं 2019-20 के लिए तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नराकास गुवाहाटी द्वारा यूको बैंक, अंचल कार्यालय गुवाहाटी को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु वर्ष 2021-22 के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

यूको बैंक जी डी बिड़ला स्मृति व्याख्यानमाला

अजमेर

एर्णाकुलम

करनाल

कानपुर

चेन्नै

जालंधर

जोरहाट

पुणे

बेंगलूरु

लखनऊ

वाराणसी

भोपाल

यूको भाषा सेतु सम्मान

करनाल

गुवाहाटी

चेन्नै

पुणे

बेंगलूरु

रायपुर

वाराणसी

देहरादून

पटना

मेरठ

यूको राजभाषा सम्मान

एर्णाकुलम

करनाल

कानपुर

चंडीगढ़

चेन्नै

जालंधर

जोरहाट

रायपुर

लखनऊ

भोपाल

वाराणसी

विश्व हिन्दी दिवस

चंडीगढ़

वाराणसी

बेंगलूरू

संसदीय राजभाषा समिति

एर्णाकुलम

माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा एर्णाकुलम अंचल कार्यालय का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। उक्त अवसर पर प्रधान कार्यालय की ओर से श्री विजय कुमार, महाप्रबंधक, श्री पंचानन साहु, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा तथा अंचल कार्यालय एर्णाकुलम की ओर से अंचल प्रबंधक श्री आर एस अजीत और सुश्री सजीता कलत्तील, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) भी उपस्थित थे।

भोपाल

माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा भोपाल अंचल कार्यालय का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। उक्त अवसर पर प्रधान कार्यालय की ओर से श्री विजय कुमार, महाप्रबंधक, श्री पंचानन साहू, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा, श्री सत्येन्द्र कुमार शर्मा, मुख्य प्रबंधक, राजभाषा तथा अंचल कार्यालय एर्णाकुलम की ओर से अंचल प्रबंधक श्री अमित राज, श्री लोकनाथ देवांगन, वरिष्ठ प्रबंधक(राजभाषा) और सुश्री श्वेता श्रीवास्तव, प्रबंधक (राजभाषा) भी उपस्थित थे।

यूको बैंक प्रधान कार्यालय द्वारा आयोजित हिन्दी कार्यशाला

माननीय महाप्रबंधक, मानव संसाधन प्रबंधन एवं राजभाषा श्री मनीष कुमार की अध्यक्षता में दिनांक 30 दिसंबर, 2022 को यूको बैंक, प्रधान कार्यालय विभागों के राजभाषा नोडल अधिकारियों के लिए राजभाषा हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रस्तुत कार्यशाला में विशेष रूप से पधारे माननीय महाप्रबंधक, परिचालन एवं सेवा विभाग, श्री विजय कुमार ने अपने विशिष्ट उद्बोधन से सभा को संबोधित करते हुए राजभाषा कार्यान्वयन को सही मायने में कार्यान्वित करने में विशेष बल दिया।

अंचल कार्यालयों द्वारा आयोजित हिन्दी कार्यशाला

चंडीगढ़ अंचल

लखनऊ अंचल

कोलकाता अंचल

राँची अंचल

बेंगलूरू अंचल

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार 2021-22

यूको बैंक भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में सदा ही तत्पर रहा है। इस तत्परता को विभिन्न मंचों स्वीकृति मिलती रही है। हमें गौरव है कि राजभाषा कार्यान्वयम में प्रदर्शित कार्यनिष्पादन के लिए हमारे प्रधान कार्यालय को वर्ष 2021-22 कर लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार-प्रथम से पुरस्कृत किया गया। वर्ष 2020-21 के लिए भी हमारे बैंक के प्रधान कार्यालय को यह पुरस्कार प्राप्त हो चुका था।

ऊपर के चित्र में सूरत में आयोजित हिंदी दिवस तथा द्वितीय राजभाषा सम्मेलन में हमारे तत्कालीन प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री सोमा शंकर प्रसाद राजभाषा कीर्ति पुरस्कार -प्रथम ग्रहण करते हुए परिलक्षित हैं।

Ode to Autumn
ओड टू ऑटम

जॉन कीट्स

जॉन कीट्स श्रेष्ठ रोमांटिक कवियों में से एक थे। उनका जन्म 31 अक्तूबर 1795 लंदन के मुनफिल्ड में हुआ था। उनमें कवि बनने की इच्छा स्पेंशर के फेयरी क्वीन से परीचित होने के बाद जागी। उनकी पहली कविता 'लाइन्स इन इमीटेशन ऑफ स्पेंशर' 1814 में प्रकाशित हुई। उनके गीतात्मक कविताओं यथा 'ऑन इंडोलेंस', ऑन अ ग्रेसिअन अर्न, टू सायकी, टू अ नाइटिंगल, ऑन मेलनकोली और ओड टू ऑटम ने उन्हें अंग्रजी साहित्य का महान रोमांटिक कवि बना दिया।

कविता 'ओड टू ऑटम' में कीट्स ने मनमोहक शब्दचित्रों की लड़ी पिरोकर प्रकृति-सौन्दर्य के पहलुओं को शरद ऋतु की विशेषता और सुंदरता के साथ व्याख्यायित किया है।

असामयिक निधन 23 फरवरी 1821

कुहरे के मौसम के कर्ता और मृदु फलों के प्रदाता,
दमकते सूर्य के सुहृद !
सूर्य के साथ तेरी कारिस्तानी कि
छप्पर पर फैली लताओं में फल लदें
औ' रस से भरें।
तेरी कारिस्तानी कि
सेब के पेड़ काई लगे कुटीर-वृक्षों को धकियाएं,
फल भीतर से सरसें।
तरोइयाँ पुष्ट हों और अखरोट में
भरे मीठी गिरी औ'
हों फूल सुमुकुलित।
यही नहीं,
ग्रीष्म जाएगा ही नहीं इस सोच में डूबी मधुमक्खियों के लिए फूल,
औ' लबालब भरे उनके मधुछत्र।

जॉन कीट्स का 'ओड टू ऑटम' शरद ऋतु के सौन्दर्यमूलक पक्ष की प्रशंसा में लिखी गई कविता है। इसमें प्रकृति की प्रचुरता, क्षणभंगुर सुंदरता का ललित चित्रण है। ओड (Ode) संबोधन शैली में मिश्र छंद की सामान्यत: ओजपूर्ण कविता होती है। इसका उद्गम नृत्य एवं संगीत के साथ गाए जानेवाले यूनानी समवेत गीतों में माना जाता है। आलोचक कीट्स के ओड को अंग्रेजी काव्य की सर्वश्रेष्ठ कृतियों में से एक मानते हैं।

यूको बैंक UCO BANK

(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

यूको बैंक, राजभाषा विभाग प्रधान कार्यालय कोलकाता, 700 001 द्वारा प्रकाशित तथा Giri Print Service, 91A, Baithakkhana Road, Kolkata-700 009 में मुद्रित। आंतरिक वितरण के लिए।